ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 32 | 5 से 11 नवम्बर, 2015 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 | का. कृ. 09

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण अंक

ऐ मेरे प्यारे ऋषि

जलते कितने दीप बुझ गए, चलते सूरज चांद रुक गए।
तुमने दिया जलाया ऐसा, आंधी जिसको शीश नवाए।
बादल तुम्हें ले गया कोई, बरस रहे फिर भी अमृत से।
जितना गया मिटाया तुमको, उतने बने अडिग पर्वत से।
कोई कंचन मेंट न पाया, माटी के पद-चिन्ह तुम्हारे।
तुमने चरण बढ़ाया ऐसा, मंजिल जिसको शीश नवाए।
ऐसा मंत्र जगाया तुमने, गंगा जल जिस पर न्योछावर।

ऐसा रचा तपोवन तुमने, राजमहल जिस पर न्योछावर।
बना हृदय ही देवालय 'ओ', वाणी शंखध्वनि सी गूँजी।
उठी ओ३म् की मूरत ऐसी, मंदिर जिसको शीश नवाए।
जो तुमने कह दिया वचन से, वेदों की बन गई ऋचाएँ।
जो तुमने लिख दिया कलम से, युग-युग की बन गई कथाएँ।
तर्थ बन गया हर कण जिसको, मिला पाँव का परस तुम्हारा।
ऐसी पुण्य कथा लिख डाली, संगम जिसको शीश नवाए।।

– श्री जगदीश चन्द्र 'जीत'

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

दयानन्द तो बस दयानन्द ही थे

– कृष्ण चन्द्र गर्ग

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया। महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त था अर्थात् आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबल को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना न मानते थे। वे लिखते हैं ''जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।''

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्टों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और हिन्दुत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति-प्रथा, सती-प्रथा, विधवा विवाह का निषेध आदि अनेक ऐसी कुरीतियाँ जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएँ वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाइयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनते। हिन्दू मत कच्चे धागे की तरह बन गया था जिसे हलके झटके से तोड़ा जा सकता था। महर्षि दयानन्द ने पुराणों का पुरजोर खण्डन किया और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को प्रकट किया। इस्लाम और ईसाईयत की कमियाँ और खराबियाँ दिखाकर हिन्दुओं में आत्मविश्वास पैदा किया जिससे उन्हें अपने वैदिक धर्म में बने रहने की प्रेरणा मिली और हिन्दू मत लोहे की छड़ सा मजबूत हो गया।

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया – 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य-असत्य को जानने वाला है। परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में उपनिषद् का निम्न श्लोक उद्धृत किया है –

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्॥

अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है। स्वामी जी श्रीकृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं ''देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी लगाई और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों कर होती?''

महाभारत के उद्योगपर्व (विदुरनीति) में एक श्लोक है –

पुरुषा बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

महात्मा विदुर धृतराष्ट्र से कहते हैं – 'हे राजन्! इस संसार में दूसरे को निरन्तर प्रसन्न करने के लिए प्रिय बोलने वाले प्रशंसक लोग बहुत हैं। परन्तु सुनने में अप्रिय लगे और वह कल्याण करने वाला वचन हो उसका कहने और सुनने वाला पुरुष दुर्लभ है।'

महर्षि दयानन्द ऐसे ही हितकारक वचन कहने वाले विरले मनुष्य थे। वे राजे-महाराजाओं के सामने, बड़े से बड़े अंग्रेज अफसरों की उपस्थिति में, मुल्ला मौलवियों और पण्डों की मौजूदगी में निर्भीक होकर सबके हित की सत्य बात कहा करते थे।

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य-असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी मूर्तिपूजा को सब बुराईयों की जड़ मानते थे और मन्दिरों को उनके अड्डे मानते थे। जुलाई 1869 की बात है। कानपुर में पं. गुरुप्रसाद और प्रयागनारायण ने 'कैलास' और 'बैकुण्ठ' नामक दो मन्दिर बहुत रुपया लगाकर बनवाए थे। स्वामी जी ने उनसे कहा था कि आप लोगों ने लाखों रुपया व्यर्थ खो दिया। इससे तो यह अच्छा था कि कान्यकुब्ज कन्याओं का जो 30-30 वर्ष की कुमारी बैठी हैं, विवाह करवा देते या कोई कला-कौशल का कारखाना खोलते जिससे देश और जाति का भला होता। स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो भी वे विनम्र ही बने रहते थे।

सन् 1872 में भागलपुर में प्रसंग आने पर स्वामी जी ने कहा कि हिन्दुओं में जो मुसलमानों के प्रति सहानुभूति का अभाव और द्वेष का भाव है उसका कारण यह नहीं कि हिन्दुओं को मुसलमानों से स्वाभाविक द्वेष है, वास्तव में उसका कारण हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों का व्यवहार है।

महर्षि दयानन्द के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य परोपकार था। सन् 1868 के आरम्भ की बात है। कर्णवास में एक दिन पण्डित इन्द्रमणि ने स्वामी जी से कहा कि आप अवधूत होकर खण्डन-मण्डन के बखेड़े में क्यों पड़े हैं तो उन्होंने उत्तर दिया कि ''मेरे लिए बखेड़ा नहीं है, प्रत्युत् यह ऋषियों का ऋण चुकाना है। स्वार्थी लोगों ने ऋषि सन्तान को कुरीतियों में फँसा रखा है। मुझसे उसकी यह दीन-दशा देखी नहीं जाती। मैंने उसे सन्मार्ग पर लाने का प्रण कर लिया है।'' इसीलिए महर्षि ने आर्य समाज का छठा नियम बनाया – ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है......।'' इसी प्रकार आर्य समाज का नौवां नियम बनाया – 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।'

स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे ''मेरा काम लोगों के मन मंदिरों से मूर्तियाँ निकलवाना है, ईंट-पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना-फोड़ना नहीं है।

सन् 1878 में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दरलाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया – मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जायेगा।

भोजन कैसे भ्रष्ट होता है – फर्रुखाबाद में एक दिन एक साध स्वामी जी के लिए कढ़ी और चावल बनाकर लायाऔर उन्होंने उसे खा लिया। इस पर ब्राह्मणों ने कहा कि आप भ्रष्ट हो गये जो साधों के घर का भोजन खा लिया। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि भोजन दो प्रकार से भ्रष्टा होता है – एक तो यदि किसी को दुःख देकर धन प्राप्त किया जाए और उससे अन्न आदि खरीद कर भोजन बनाया जाए, दूसरे भोजन मलिन हो या उसमें कोई मलिन वस्तु गिर जाए। साध लोगों का मेहनत का पैसा है, उससे प्राप्त किया हुआ भोजन उत्तम है।

देश की भाषा हिन्दी – महर्षि दयानन्द देश की एकता के लिए आवश्यक समझते थे कि सारे देश की भाषा एक हिन्दी हो। इसलिए वे अपने ग्रन्थों का किसी दूसरी भारतीय भाषा में अनुवाद न करवाना चाहते थे। वे चाहते थे कि सभी देशवासी उनके ग्रन्थों को हिन्दी में ही पढ़ें। वे मानते थे कि भारतवासियों को हिन्दी भाषा सीख लेना कुछ कठिन नहीं है। जो इस देश में जन्म लेकर अपनी भाषा सीखने का परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है। उनके ग्रन्थों का अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में अनुवाद के वे विरोधी न थे। सन् 1870 में मिर्जापुर में स्वामी जी ने एक बंगाली बनवारीलाल को अंग्रेजी सीखने के लिए और मैक्समूलर कृत वेदों का अंग्रेजी अनुवाद सुनने के लिए नौकर रखा था। सन् 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सायंकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिहवा मात्र से खण्डन करने

अगले पृष्ठ पर जारी है

ज्योति पर्व दीपावली की

हार्दिक शुभकामनाएँ

सार्वदेशिक सभा परिवार समस्त आर्यजनों को दीपावली के पुनीत पर्व पर सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना से परिपूर्ण बधाई देता है।

दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण, समस्त आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलने तथा संगठित होने की सर्वोच्च प्रेरणा बनें, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

स्वामी आर्यवेश – सभा प्रधान
प्रो. विट्ठलराव आर्य – सभा मंत्री
पं. माया प्रकाश त्यागी – कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पृष्ठ–2 का शेष

से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला कसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है।

वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं "मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।" महर्षि का यह मत सभी ऋषि–मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं – बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे। अर्थात् वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं – यस्तर्केणानुसन्धते तं धर्म वेद नेतरः। अर्थात् जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं। महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वरकृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री–पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय बहुत विस्तृत था। "भ्रान्ति निवारण" पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं – "मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।"

अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में – 23 नवम्बर, 1880 को थियोसोफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवेट्स्की को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्याचार से कुछ–कुछ छुटकारा मिला है। "मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पार्लियामेंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान् और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।"

पण्डित महेन्द्रपाल आर्य (पूर्व नाम मौलवी महबूब अली) जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाला में एक बड़ी मस्जिद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर वे आर्य समाज में आ गये। वे कहते हैं "मैं अज्ञानियों के टोले से निकल कर ज्ञानियों के टोले में आया हूँ। मुस्लिम समाज लगभग अनपढ़ व अन्धविश्वासियों का समाज है। आर्य समाज पढ़े लिखे बुद्धिजीवियों का समाज है। बाकी जिन्दगी मैं पढ़े लिखे अन्धविश्वासमुक्त नेक लोगों के साथ बिताना चाहता हूँ।"

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल एम. ए. के विचार – "इस महान् ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।"

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी "हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।" महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में मनुष्य की परिभाषा में लिखते हैं – "मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से अन्यायाकरियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।" महाराज भर्तृहरि जी का एक श्लोक है –

निन्दन्तु नीतिनपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

अर्थात् नीति को जानने वाले लोग चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें, धन आए या जाए, मृत्यु अभी आ जाए या चिरकाल के बाद आए, परन्तु धैर्यवान लोगों के पग न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते। यह श्लोक महर्षि दयानन्द के जीवन पर पूरी तरह घटित होता है। सभी प्रकार के विघ्न–बाधाओं, खतरों और प्रलोभनों से टक्कर लेते हुए स्वामी जी सत्य और न्याय के प्रचार पर डटे रहे। प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था – **'हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।'**

महान् कहानीकार उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। "मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आंखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएँ अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगे, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्ति के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।

दयानन्द तो बस ....

एक बार फिर आना होगा......

– हरि कुमार साहू

पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

खूब हो रही पत्थर–पूजा, निराकार प्रभु को हैं भूले।
नए–नए पाखण्ड रचा कर, ढोंगी दलदल बाबा फूले।।
ऐसे धूर्त ठगों को अब सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

भारत में हिन्दी की देखो कैसी दुखद हुई है दुर्गति?
जन–मानस में फिर स्थापित हो हिन्दी, ऐसी दो सन्मति।।
भारत माँ को हिन्दी के किरीट से पुनः सजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

नारी आज भोग्या बनकर भारत भ्मार में लुटी पिटी है।
मातृ शक्ति को पूजित, सम्मानित करने की वृत्ति मिटी है।।
फिर से नारी को भोग्या से पूज्या हमें बनाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

गूँजे बेटी की किलकारी, ऐसी बहे स्नेह की गंगा।
कन्या भ्रूण मिटाने वालों को समाज में कर दें नंगा।।
बेटी के हत्यारों को अब फाँसी पर लटकाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

भारत में कट रहीं आज भी नित–नित लाखों गौ माताएँ।
इनकी दारूण व्यथा कथा हम किसे सुनाएँ? किसे बताएँ?
जन–जन में जाकर **गौ–करुणा निधि** का अलख जगाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

भूले माता–पिता की सेवा, भूले वृद्ध जनों का आदर।
गुड्डा गुड़िया पूज रहे हैं, चढ़ा रहे कब्रो पर चादर।।
दसवाँ, मृतक भोज, तेरही, बरखी है व्यर्थ, बताना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

शाकाहार त्याग कर दुनिया हुई जा रही मांसाहारी।
धूम्रपान अरू मद्यपान से दस दिश फैल रही बीमारी।।
हो आहार विहार सात्विक, यह सबको समझाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

पर्यावरण अशुद्ध हो रहा, प्रकृति हो रही है नित आहत।
जल,थल, वायु हो रहे दूषित, यज्ञ मात्र से होगी राहत।
यज्ञ सर्व जन के हित में है, सबको यज्ञ कराना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

नया नाम डेटिंग काले कर, खूब वेश्यावृत्ति हो रही।
नवयुवकों में बेशर्मी से इसकी अति आवृत्ति हो रही।
सत्रह बार जहर खाया है, कई बार फिर खाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

वेद प्रचारित करने खातिर ईंटे, रोड़े, पत्थर खाए।
कष्ट सहे जीवन भर लेकिन अडिग रहे, तुम ना घबराए।।
वेदों के दीपक पर क्या तुम सा कोई परवाना होगा?
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

– पूर्व मंत्री, आर्य समाज, गांडपारा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
मो.:–9301142737

आर्यों! याद करो ऋषि की कुर्बानी

– डॉ. महेश विद्यालंकार

आर्यो! सोचो? यदि ऐसे दैवीय गुणों वाला महापुरुष दुनिया की किसी अन्य धरती पर पैदा हुआ होता तो लोग उनकी देवदूत पैगम्बर तथा मसीहा की तरह पूजा करते। उनके प्रेरक सन्देश एवं उपदेशों को शिलालेखों व इतिहास में अमर बना देते। उनके चित्रों को देवताओं की तरह पूजते। उनके चरण रज को पाकर सौभाग्य मनाते। उनके नाम की माला पहनते। हम भारतीयों ने ऋषि के उपकारों व बलिदान के बदले में दिया ही क्या है? अनेक बाहर जहर देकर मारने की कोशिश की, अन्तत: उन्हें हलाहल पिलाकर ही हमें चैन आया?

खंजर भी चलाये, जहर भी पिलाये अपनो ने।
अपनों के अहसां क्या कम हैं, गैरों की शिकायत क्या होगी?

दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। अज्ञान, अन्धविश्वास असत्य, अधर्म, पाखण्ड आदि के विरोधी महामानव एवं युग पुरुष महर्षि दयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमर बेला का नाम दीवाली है। आजीवन विषपायी ऋषि के तप, त्याग, बलिदान, उपकारों के प्रति आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करने की पुण्य तिथि है। सजल नेत्रों से देवात्मा को नम्र श्रद्धांजलि देने का यह स्मृति पर्व है। एक ओर दीपावली की प्रसन्नता एवं उल्लास है। दूसरी ओर युगों के बाद वरदान रूप में प्राप्त ऋषिवर के नश्वर शरीर छोड़ने की विदा बेला है। ऋषि संसार को सत्यज्ञान, सत्यधर्म एवं सत्य परमेश्वर का मार्ग दिखाने आये थे। दीपावली के दिन असंख्य दीप जलाकर चले गये। उसी महाबलिदान की अमर कहानी दीवाली हर साल दुहराती है। इसी दिन उस पुण्यात्मा ने संसार से महायात्रा की थी। इसलिए दीपावली आर्य समाज के इतिहास में विशेष महत्त्व रखती है।

सूर्य अस्ताचल को बढ़ रहा था। अजमेर के भिनाई भवन में ऋषिवर शान्त भाव से लेटे थे। वह महायोगी अनुभव कर रहा था। आज कौन सा मास, पक्ष व दिन है। किसी भक्त ने कहा – आज कार्तिक मास की अमावस्या और दीपावली का पर्व है। उनका मुखमण्डल प्रसन्न एवं शान्त था। थोड़ी देर बाद बोले सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दो। मुक्तात्मा ने ऊपर की ओर दृष्टि करके चारों ओर अलौकिक और चमत्कारी भाव देखा। प्रार्थना की, गायत्री मन्त्र का पाठ किया। तीव्र स्वर से ओ३म् का उच्चारण करने लगे। चेहरे पर अपार शान्ति सन्तोष व प्रसन्नता थी। शान्तभाव से मुख से उच्चारित होने लगा – हे दयामय सर्व शक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह बोलकर लम्बी सांस खींची और बाहर निकाल दी। प्रभु का प्यारा प्रभु की शरण में चला गया। भक्त जन असहाय बनकर देखते रहे। यह निराले योगी की, निराली अन्तिम यात्रा थी। यह दुनियां के इतिहास में निराली ही घटना है। जो कोई होश में, तिथि, दिन पूछकर मुस्कराता तथा प्रभु को स्मरण करता हुआ गया हो। ऋषि प्रभु की इच्छा से संसार में आये थे। प्रभु की इच्छा को पूर्ण करके चले गए। जाते जाते भी नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बना गए। विष देने वाले को भी जीवनदान दे गए। सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के पुनरुद्धार, वेद प्रचार और मानवता के कल्याण एवं उत्थान में लगा गए। ऋषि का पूरा जीवन प्रेरक था और मृत्यु भी प्रेरक बनी।

ऐसा अद्वितीय इतिहास पुरुष युगों के बाद देश को मिला था। दुर्भाग्य है कि उस महापुरुष का अपनों और परायों किसी ने उचित मूल्यांकन नहीं किया। सच्चाई है कि संसार आज तक उनके विचारों, आदर्शों एवं जीवन सन्देशों को समझ नहीं सका। वे सत्य के पुजारी, सत्यवक्ता, सत्य के प्रचारक और सत्य पर ही शहीद हो गए। ऋषि का समग्र जीवन, कठिनाईयों विरोधों और संघर्ष में गुजारा। उन्होंने कभी अपने लिए न चाहा, न माँगा और न संग्रह किया। कोई मठ, मंदिर आश्रम आदि नहीं बनाया। वे देश की दीन हीन दुर्दशा को देखकर बेचैन होते थे। जो देश कभी आध्यात्म सम्पदा और सत्यज्ञान के कारण जगत्गुरु था। जो देश धन-धान्य वैभव के कारण सोने की चिड़िया कहलाता था। ऋषि देश में फैले अज्ञान, अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड, गुरुडम, आलस्य, आपसी फूट आदि के लिए घण्टों करुणक्रन्दन किया करते थे – किसी कवि ने उनकी पीड़ा को इन शब्दों में रखा है –

एक हूक सी दिल में उठती है, एक दर्द जिगर में होता है। हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है।।

वह महामानव अपने दु:ख दर्द व अभाव के लिए कभी नहीं रोया। वे जीवन भर कभी चैन से नहीं सोये। वे जहर पीते

रहे, पत्थर खाते रहे, अपमान सहते गए, गालियाँ सुनते रहे। फिर भी वह दया का भण्डार रो रोकर आर्य जाति को जगाता रहा। यदि समय के सभी महापुरुषों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाये और दूसरे पलड़े में ऋषि को तो ऋषि अपने कृतित्व, व्यक्तित्व योगदान, तप त्याग बलिदान आदि की दृष्टि से भारी होंगे। उन्होंने संसार के बड़े से बड़े प्रलोभन, पद, धन, महत्त्व नाम, आदि को ठुकरा दिया। जीवन में कहीं दाग नहीं लगने दिया। वे तो जगत में उनसठ साल के डेपुटेशन पर आये थे। संसार को प्रत्येक क्षेत्र में सत्यज्ञान व आदर्श देकर चले गए।

आर्यो! सोचो? यदि ऐसे दैवीय गुणों वाला महापुरुष दुनिया की किसी अन्य धरती पर पैदा हुआ होता तो लोग उनकी देवदूत पैगम्बर तथा मसीहा की तरह पूजा करते। उनके प्रेरक सन्देश एवं उपदेशों को शिलालेखों व इतिहास में अमर बना देते। उनके चित्रों को देवताओं की तरह पूजते। उनके चरण रज को पाकर सौभाग्य मनाते। उनके नाम की माला पहनते। हम भारतीयों ने ऋषि के उपकारों व बलिदान के बदले में दिया ही क्या है? अनेक बाहर जहर देकर मारने की कोशिश की, अन्तत: उन्हें हलाहल पिलाकर ही हमें चैन आया?

खंजर भी चलाये, जहर भी पिलाये अपनो ने।

अपनों के अहसां क्या कम हैं, गैरों की शिकायत क्या होगी?

ऋषि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं, आदर्शों और उपकारों से भरा हुआ है। जिसने उन्हें, देखा, सुना, पढ़ा, समझा और सम्पर्क में आया। उसकी जीवन धारा बदल गई। कायाकल्प हो गया। न जाने कितने, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, लेखराम, अमीचन्द आदि के जीवन सन्त और परोपकारी बन गए। इतनी चुम्बकीय व जादुई शक्ति और आकर्षण और किसी महापुरुष में नजर नहीं आता है। लोग तलवार लेकर आये और शिष्य बनकर गए। जिधर से निकले, उधर से ही ढोंग, पाखण्ड, अज्ञान, पोपलीला आदि मिटाते गए। सन्मार्ग एवं सत्धर्म का प्रकाश फैलाते गए। रोती हुई भारत माता के आंसू किसी ने पोंछे हैं – वह केवल ऋषि दयानन्द थे। ऋषि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किले की दीवार बनकर खड़े हुए। देश, धर्म, जाति और मानवता का दर्द उन्हें बेचैन करता था। इन्हीं के निर्माण व उद्धार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगाया तथा बलिदान कर दिया। ऋषि ने असत्य, अधर्म और गलत बातों से कभी समझौता नहीं किया। यदि उन्होंने समझौता तथा दूसरों को राजी करने वाली बातें की होती तो वे अपने युग के सबसे बड़े भगवान होते। ऋषि ने अपने जीवन में कभी चमत्कारी और दैवीय रूप नहीं आने दिया। आज उन्हीं के अनुयायी समझौतावादी, सुविधावादी तथा अवसरवादी बनकर, सिद्धान्तों, आदर्शों एवं विचारधारा का हनन कर रहे हैं। यह गंभीर चिन्ता का विषय है। आज आवश्यकता है – आर्य समाज सभा संस्था, संगठन और ऋषि के नाम पर चलने वाले स्कूल कॉलेज, आश्रम संस्थान आदि को ऋषि के अस्तित्व, स्वरूप, सिद्धान्त, परम्परा एवं आदर्शों की कठोरता से रक्षा करें। जो उस पुण्यात्मा ने ज्ञान व विचारों का दीप जलाया था। उसे वर्तमान में तेजी में फैलते ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, अज्ञान, मूर्तिपूजा, अवतार, गुरु महन्त आदि बुझा रहे हैं। स्वामी दयानन्द का नाम आर्य समाज के अलावा कोई नहीं लेता है? यदि हमीं ऋषि को जीवन, व्यवहार, सभा संगठन, संस्थाओं आदि से निकाल देंगे उनके आदर्शों व विचारों को भुला देंगे तो कौन उन्हें जीवित रखेगा? महापुरुष जीवित और अमर अपने सिद्धान्तों, अनुयायियों, विचारों तथा आदर्शों से रहते हैं।

परम्परागत प्रतिवर्ष दीपावली आती है। हम आर्यजन भी श्रद्धांजलि के रूप में निर्वाणोत्सव मनाते हैं। लोग मिलते हैं। मेला लगता है। नेतागण आते हैं। जोर शोर से भाषण होते हैं। कुछ देर बाद भीड़ बिखर जाती है। बस हमारा कर्त्तव्य पूरा हो गया। क्या थी निर्वाणोत्सव की मूल, चेतना, भावना और सन्देश? क्या यही उस महामानव के सम्पूर्ण कृतित्व एवं व्यक्तित्व का मूल्यांकन है? क्या यही आजीवन विषपायी के तप, त्याग एवं बलिदान का प्रतिदान है? केवल जलसा, जलूस, लंगर, फोटो व माला तब तक ही हमारे भावी कार्यक्रम होते हैं? क्या इसीलिए उस देवात्मा ने मुक्ति के आनन्द को ठुकराकर आर्य समाज बनाया था?

ये पर्व, स्मृतिदिवस, जयन्तिया, सम्मेलन आदि हमें जगाने आते हैं? क्या खोया, क्या पाया? कहाँ के लिए चले थे कहाँ जा रहे हैं? सोचो! ठहरो! देखो! मूल में भूल कहाँ है? ऋषि निर्वाण दिवस हमें सन्देश देता है – जिस उद्देश्य, आदर्श, सिद्धान्त तथा कार्यों के लिए आर्य समाज बनाया था। उसके लिए हम क्या कर रहे हैं? ऋषि का महान बलिदान हमें पुकार रहा है। यदि सच्चे अर्थ में ऋषि को स्मरण और श्रद्धांजलि देनी है तो उनके बताए मार्ग पर चलो। उनकी कुर्बानी को स्मरण करो। यही निर्वाणोत्सव का सन्देश और प्रेरणा है।

–बी.जे.-29, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली–52

ज्योति पर्व और वर्तमान भारतीय परिदृश्य

– अवधकिशोर

अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर और असत से सत की ओर सतत अग्रसर होने की श्रेष्ठ और समुज्जवल कामना हम करते हैं, हमारे पूर्व के ऋषि-महर्षियों ने यह श्रेष्ठ ज्ञान का दीप अखण्ड रूप से प्रज्जवलित किया और सद्गुणों के विकास के साथ ही उस ध्येय पथ को अपने जीवन में उतारा भी, साथ ही लोक कल्याण में उसे लगाया। आज जो समाज और राष्ट्र की दुरावस्था है उसे देखकर यह लगता है कि हम भूलते जा रहे हैं कि हम ऋषि-मुनियों की संतानें हैं जिन्होंने हमें श्रेष्ठ ध्येय पथ का दिशादर्शन कराया, आज चारों तरफ यही दृष्टिगोचर होता है कि तम (अन्धकार) का ही साम्राज्य है, तम (अन्धकार) ने उजालों को ही निगल लिया है। दम्भ, झूठ, भय, भ्रष्टाचार और अनाचार ने आसुरी संस्कृति को ही बढ़ावा दिया है जो देव संस्कृति को दिन पर दिन निगलता जा रहा है देश समाज और मानवता की चिन्ता किए बिना सभी अपने स्वार्थ साधना में लगे हैं, भ्रष्टाचार ने देश के विकास को रोक दिया है, झूठ ने सच को पीछे ढकेल दिया है तथा मिलावट ने जीवन के अरोग्यता को नष्ट कर दिया है, प्रकृत प्रदत्त अमृत को भी वह विष में बदल दिया है। पहले लोग कुछ भी गलत करने से डरते थे, उन्हें यह भय था कि उपर वाला देख रहा है। अब छल-प्रपंच और दम्भ में वे सब कुछ भूल चुके हैं, कम से कम समय में सबकुछ पा लेने की चाह और महत्वाकांक्षा उसे कुछ भी करने को मजबूर कर देती है, जो समाज की दशा और दुर्दशा है वही देश की भी है, भ्रष्टाचार और घोटालों ने देश को कंगाल बना दिया है व्यक्ति समाज के सहयोग से आगे बढ़ता है और वहां पहुँचकर वह अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करता है जो जितना बड़ा है, अपनी शक्ति और सामर्थ्य से उसी रूप में समाज देश को नुकसान पहुँचा रहा है। आडम्बरवाद, पाखण्डवाद और स्वार्थवाद ने राष्ट्रवाद को पीछे ढकेल दिया है स्वार्थवाद की विषबेल ने सम्पूर्ण राष्ट्र को जकड़ लिया है, यह इतनी तेजी से फैल चुकी है कि तम (अन्धकार) रूपी दानव का ही साम्राज्य बढ़ रहा है, चिरागों की लव मंद पड़ रही है, मंहगाई ने उसे अपना ग्रास बना लिया है, ज्योति पर्व पर हम दीये के समर्पण से भी सिख नहीं लेते, जिस दीये ने अपने को जलाकर ही हमें प्रकाश दिया है, जिससे चारों तरफ ही खुशियाँ बिखरी हैं। अन्धकार का नाश प्रकाश का प्रभुत्व बढ़ा है।

सरकारें दावा करती हैं महँगाई कम होगी, सबको भरपेट भोजन मिलेगा, लेकिन उसके ठीक विपरीत महंगाई सुरसा के मुख की भांति दिन दूना रात चौगुना बढ़ती ही जा रही है, त्योहारों पर भी उसकी मार स्पष्ट दिख जाती है, जरूरत की अनेक चीजें हमारी पहुँच से बाहर जा रही है, लेकिन सरकार है कि बेसुरा राग अलापे जा रही है, दीवाली में तेल महंगा, बत्ती महंगी, दीया महंगा, दीपक जले भी तो कैसे? आनन्द और खुशियों का त्योहार चारों तरफ ही फीका दिखता है, कभी आज से अड़सठ वर्षों पहले मिली आजादी का सूर्य उगा था, लेकिन इतने लम्बे वर्षों के बाद भी उजाला करोड़ों घरों तक नहीं पहुंचा जनता बेहाल है नेता लोग घोटालें पर घोटालें किये जा रहे हैं। बेईमानी और अराजकता का चारों ओर बोलबाला है कौन पाक साफ है अब यह कहना मुश्किल है आम जनता के हिस्से में तो भय, भूख और बीमारी ही है, उसे सबकुछ ही सहना पड़ता है, वह करें भी तो क्या करें, वह थक हार कुम्भकर्णी नींद सोने को मजबूर है कभी वह जगती है फिर सो जाती है बार-बार जनता ठगी जाती है, उसके नियत में ठगना है बेवकूफ बनाना है आवश्यकता है उसके स्वाभिमान को जगाने की, राष्ट्र के अतीत के गौरव को राष्ट्रवासियों को बताने की। यह भारत भूमि घोटालों और भ्रष्टाचार की भूमि नहीं थी, यह सोने की चिड़िया थी, जहाँ पर दूध-दही की नदियां बहती थी, जहां के लोग प्रकाश के ही पुजारी थे समय की आवश्यकता है जनता एक बार हुंकार कर उठे तो फिर देश का भाग्य चमक उठेगा, तम (अन्धकार) विदीर्ण हो जायेगा चारों तरफ ही प्रकाश का साम्राज्य होगा। भय, भूख, बीमारी से देश मुक्त हो जायेगा। कोई घोटाला और भ्रष्टाचार करने वाला होगा ही नहीं, फिर तो दीप की लव सतत ज्योतित ही रहेगी, माँ भारती अपने सपूतों को बार-बार पुकार रही है, उठो तम (अन्धकार) को विदीर्ण करने हेतु शंखनाद करो। राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान स्वार्थहित की तिलांजलि दो तथा ज्योति पर्व के दीपों से प्रेरणा लो। सम्पूर्ण विश्व में भारत देश की जो छवि बन रही है उसे इस देश की जनता जनार्दन ही ठीक कर सकती है, जब तक जनता अपने को दीनहीन और असहाय महसूस करती रहेगी, घोटाले होते रहेंगे। देश लुटता रहेगा और जनता पिटती रहेगी यह स्थिति सम्मानजनक स्थिति नहीं है लूटना और पिटना जो हमारी नियत बन गई है इससे ऊपर उठना होगा और यह तभी सम्भव है जब हम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के आधार पर संगठित हों और एक महान लक्ष्य के प्रति अपने परम कर्त्तव्य को समर्पित हों।

(लेखक प्रसिद्ध टिप्पणीकार हैं)

जगमग दीप जलाएँ

आओ! आर्य सपूतों आओ! जगमग दीप जलाएँ।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं॥
मिट्टी के दीपों से निश्चय, मिटता नहीं अन्धेरा,
अगणित तारों के उगने से, होता नहीं सबेरा।
दानवता के तिमिरतैन्य ने, महिमामण्डल है घेरा,
रहा नहीं है मानवता का, सुन्दर सुखद बसेरा।
बिखरा किरणें ज्ञान ज्योति की, नया सबेरा लाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं॥
तम के अंचल में सोता है, आज यहाँ दिनमान,
ज्ञान हमारा कहांलुप्त है, विस्तृत क्यों अज्ञान?
चलो, देख लो, कहांसो रहा, भारत का अभिमान,
सत्य शिवम् सुन्दरता पुरित, कहां गए प्रतिमान?
बन करके आलोक पुंज हम, जाग्रत ज्योति जगाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएँ॥
लोभ-मोह-मद मत्सर का, है फैला पारावार,
काम-क्रोध बढ़ रहा चैतुर्दिक, नष्ट धर्म का सार।
मानवता के तत्वों को क्यों? होता है व्यापार।
भौतिक संस्कृति नहीं कभी, कर सकती है उपचार।
धर्माध्यात्म प्रदीप प्रभाहम, पुनः प्रदीप्त कराएं।
गहन शिविर में भटक रही, जगती को राह दिखाएँ॥
ऐसा दीप जले जिससे, न रहे तिमिर का लेश।
ज्योतिर्मय हो पूर्ण धरा, यह प्रगटे ज्ञान दिनेश॥
दम्भ द्वेष-मिथ्या हिंसा का बचे नहीं अवशेष,
प्रेम-दया ममता का, सदा रहे उन्मेध।
शांति सफलता समृद्धि के संगीत मनुज सब गाएं।
गहन तिविर में भटक रही जगती को राह दिखाएँ॥

- राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दूरदर्शी मानव निर्माण की योजना क्या थी, क्या हम उस पर चल रहे हैं

- पं. उम्मेद सिंह विशारद

महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न था, कि बालकों को जन्म से पूर्व और पश्चात् सोलह संस्कारों की भट्टी में डाल देने पर वह 25 वर्ष बाद युग को ही बदल देंगे। क्योंकि पुरानी पीढ़ी का स्थान आज के जन्में बच्चे लेंगे और वे जैसे होंगे वैसा ही युग होगा।

महाभारत युद्ध के बाद भारत वर्ष का इतिहास ही बदल गया था। भारतवासी अपनी प्राचीन वैदिक संस्कार संस्कृति व सभ्यता को भूल गये थे। परिणामस्वरूप विश्व गुरु भारत अराजकता एवं और उच्च चरित्र संस्कारहीनता के कारण विदेशियों का गुलाम बन गया था। और मानव जीवन के निर्माण के 16 संस्कार प्राय: लुप्त हो गये थे। यदि कहीं दो तीन संस्कार बने हुए भी थे तो वह अभ्रंश रूप में प्रचलित थे और वैदिक संस्कार भारत में बीता इतिहास बन गये थे। चतुर अवसरवादी अनाष ज्ञान रखने वाले धर्म के ठेकेदारों ने विकृत धर्म और संस्कार व संस्कृति के द्वारा अपना-अपना मत बनाकर दुकानें खोल रखी थी। जन साधारण भारतवासी बुरी तरह से इन धर्म के ठेकेदारों के चंगुल में फंस गये थे।

इतिहास गवाह है जब-जब मानवों ने ईश्वरीय नियम व सृष्टिक्रम व वैदिक संस्कारों की अवहेलना की तब-तब बार मनुष्यता मरती चली गई। आत्मरक्षा, धर्म रक्षा, समाज रक्षा, और राष्ट्रीय रक्षा के आधार वैदिक संस्कार होते हैं और जब यह ही समाप्त हो गये या विकृत बन गये तो विदेशियों ने इस गिरावट का लाभ उठाया और विश्व गुरु भारत को गुलाम बनाकर नोच डाला। इस भीषण विभिशिका से किसी भी धर्म गुरु को कोई चिन्ता नहीं थी चिन्ता थी तो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने की।

ईश्वर की कृपा से अठारवीं सदी में युग पुरुष महर्षि दयानन्द जी का जन्म हुआ था यह भी सत्य है कि युग पुरुष संसार के कल्याण के ही लिए जन्म लेते हैं। यह भी सत्य है कि जब-जब ईश्वरीय धर्म वैदिक धर्म समाप्त होने लगता है तो चारों ओर अनैतिकता का वातावरण पैदा हो जाता है। तब ईश्वरीय व्यवस्था से महापुरुष सीधे मोक्ष से लौटकर अधर्म का नाश करने को जन्म लेते हैं। वह कर्मयुक्त जीव होते हैं, संसार के बन्धनों में नहीं फंसते हैं और संसार को सत्य मार्ग दिखाते-दिखाते अपना जीवन बलिदान कर देते हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने भी रण क्षेत्र में उतरकर सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ि अर्थों पर प्रहार करके उनको इतिहास परक न मानकर योगिक अर्थ किये और उन्होंने समझा था कि सम्पूर्ण भारत में संस्कार हीनता का कारण वेदों के अर्थों का गलत अर्थ करके समाज को दिशाहीन कर दिया है। उन्होंने तत्कालीन तमाम विद्वानों से शास्त्रार्थ किये और वेदों के अर्थों को संसार के सामने रखा। यह एक अद्‌भुत वैचारिक क्रांति थी। जमाने के साथ न चलकर जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चलाया। एक नई वैचारिक क्रांति का जन्म हुआ।

संस्कार विधि : महर्षि दयानन्द ने समाज में चल रहे विकृत संस्कारों को वेदानुकूल बनाने हेतु संस्कार विधि का निर्माण किया और संस्कार विधि में सोलह संस्कारों को पूर्ण मानव बनाने की योजना तैयार की। उन्होंने समझा संस्कार अपने घर से ही बदले जा सकते हैं उन्होंने संस्कार विधि में संविधान किया कि बालक माता के गर्भ से ही तीन संस्कार होने चाहिए वह थे गर्भधान, पुंसवन तथा सीमन्तोन्नयन संस्कार। और जन्म होने के पश्चात् जातकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्ण भेद, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि कर्म। ये मानव को पूर्ण मानव बनाते हैं।

उनकी योजना थी कि यदि बालकों को उक्त संस्कारों की भट्टी में तपाया जाए तो युवा होने पर 25 वर्ष की अवस्था में एक नये युग का निर्माण हो सकता है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी के स्थान नई पीढ़ी लेती है। यदि समस्त परिवार सोलह संस्कारों को विधिवत करने लगेंगे तो एक आदर्श युग का निर्माण प्रारम्भ हो जायेगा और वैदिक संस्कारों के चलने से तमाम अनार्ष साहित्य मान्यतायें व क्रियाएं समाप्त हो जायेंगी।

सत्यार्थ प्रकाश का निर्माण : महर्षि दयानन्द जी ने अनार्ष ज्ञान कर्मो को समाप्त करने के लिए कालजयी ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश में ग्यारह सम्मुलास पूर्ण रूप से मानव बनाने का निर्देश दिया। सत्यार्थ प्रकाश ने विकृत समाज में एक हलचल मचा दी। कथित धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिलाकर रख दी। संसार सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर आश्चर्यचकित रह गया कि अब तक संसार वासियों को कैसे मूर्ख बनाया जा रहा था। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ ने एक नया इतिहास ही रच दिया।

आर्य समाज का गठन : युग पुरुष दूरदर्शी होते हैं, महर्षि जी ने समझा कि यदि सोलह संस्कारों का चलन नियमित होता रहे और आर्ष विचारों का प्रचार सदैव होता रहे, उसके लिए एक आर्ष संगठन ही होना चाहिए। उन्होंने कोई भी प्रचलित मत या नया मत न बनाकर आर्य समाज का गठन किया या यों कहें महाभारत के पश्चात्, प्राचीन आर्य संगठन की पुनरावर्ती की। और जब तक संसार में आर्य समाज रहेगा। आर्ष विचारों का प्रकाश पुंज प्रकाशित होता रहेगा। यह भी मानव निर्माण योजना थी।

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों से निवेदन : महर्षि दयानन्द जी ने मानव निर्माण की पूर्ण योजना हम आर्यों के समक्ष रखी। ज्यों-ज्यों आर्य समाज की उमर बढ़ रही है, वैसे-वैसे आर्य समाज के अनुयायी महर्षि के सिद्धान्तों से हटते जा रहे हैं। उन्होंने कल्पना की थी इस योजना से सारा संसार आर्य बन जायेगा, किन्तु हम स्वयं आर्य नहीं बन पा रहे हैं। हम अपने हृदय पर हाथ रखकर सोचें क्या हम अपने बालकों के पन्द्रह संस्कार कर रहे हैं। 16वाँ तो अन्तेष्टि कर्म परिवार करता है। आर्यों के परिवार भी पाश्चात्य सभ्यता के शिकार होते चले जा रहे हैं। केवल तीन चार संस्कार ही अधिकांश आर्यों के घरों में होते हैं।

आज संन्यासी, वानप्रस्थ प्रतिनिधि सभायें व प्रमुख आर्य अपनी कलह से जूझ रहे हैं और अपनी-अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में संघर्षरत हैं। हम आर्य, आर्य समाज की आत्मा पर आघात कर रहे हैं। यह कार्य संन्यासी वर्ग व नेतृत्व व पुरुषार्थी आर्य अच्छी प्रकार कर सकते हैं। आइये हम आज के आर्य समाज को गति देने के लिए महर्षि दयानन्द जी के उक्त सिद्धान्तों पर चलेंगे वो निश्चय ही 25 वर्ष बाद सम्पूर्ण भारत आर्य बन जायेगा या अपने विचारों को बदलने पर मजबूर हो जायेगा।

आज के संस्कार

आज भारत की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य भौतिक है, शिक्षा से मानव में सत्य व अध्यात्म संस्कार बनता है। आज नैतिक शिक्षा का आधार संसार खो चुका है। जब युवक पढ़-लिखकर उतरता है तो कोई डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, साइन्टिस्ट आदि। उसमें अपने व्यवसाय के प्रति आदर्श सत्यपथ के संस्कार न होने से वह अपने-अपने पदों में भ्रष्टाचार करना शुरू कर देते हैं, और सारा सामाजिक वातावरण दूषित हो जाता है। और मानव की जगह दानवता पनपने लगती है। शिक्षा का आधार व्यवसायिक हो गया है। और ईश्वरीय वैदिक संस्कार न होकर अपने-अपने कथित मजहबों में बालक को जन्म से उसी मत के संस्कार दिये जाते हैं और उसका जीवन उसी में बीत जाता है। परिणामस्वरूप आपसी विवादों के कारण सारा संसार बारूद की ढेर पर बैठा है।

- गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड), मो.:-9411512019

अपराजेय योद्धा महर्षि दयानन्द

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार

दयानन्द केवल धर्मोपदेष्टा न था, न ही केवल समाज सुधारक या वेद प्रचारक था। दयानन्द एक संग्राम का योद्धा था। वह संग्राम भी विचित्र था एक ओर पूरा आर्यावर्त, उनके दिग्गज विद्वान? तो दूसरी ओर अकेला दयानन्द।।

इतना ही नहीं, वह ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भी लड़ा। उसने राजनैतिक मोर्चा भी सम्भाला। अपने लेखों एवं भाषणों में सर्वदा ब्रिटिश शासन की समाप्ति की बात कही। न केवल कही ही, अपितु 1857 के स्वातन्त्र्य समर में क्रियात्मक योगदान भी गुप्त रूप से दिया, ऐसा भी कहा जाता है। यह गलत भी नहीं है क्योंकि दयानन्द का गुरु तो सचमुच क्रांतिपुंज ही था। वह नाम से ही प्रज्ञाचक्षु नहीं था अपितु अपनी विमलप्रज्ञा के द्वारा 80 वर्ष का वृद्ध होने पर भी राजाओं-महाराजाओं में अंग्रेजी राज्य को उखाड़ फेंकने के बीज बो रहा था। साथ ही वह आर्य विद्या का उद्धारक तथा व्याकरण का सूर्य भी था। दयानन्द में उसके गुरु की ये तीनों ही विशेषताएँ समाविष्ट हो गई थीं।

गुरुवर विरजानन्द की भांति ही दयानन्द भी क्रांति दूत था। वह वीरत्व की साक्षात मूर्ति था। वह परम ईश्वर विश्वासी था तथा सत्य एवं ब्रह्मचर्य ने तो मानो साक्षात् दयानन्द के रूप में ही शरीर धारण कर लिया था। वह परम योगी भी था। इन गुणों के आधार पर ही वह, जीवन संग्राम में अकेला ही डटा रहा। उसके उक्त गुण ही उसकी सेना थे। इनके बल पर ही उसने संग्राम का चहुं ओर मोर्चा खोल दिया, विजय शंख फूंक दिया।

यह संसार युद्ध स्थली ही है। बड़े-बड़े युद्ध राज्यों की प्राप्ति के लिए ही किये जाते हैं। महाभारत के धर्मयुद्ध में भी भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कहा था –

'हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।'

अर्थात् युद्ध में मरने पर तुम्हें स्वर्ग मिलेगा तथा विजयी होने पर राज्य की प्राप्ति होगी। दयानन्द के सामने ऐसा कोई प्रलोभन न था। उसने तो इस युद्ध के लिए अपने मोक्ष सुख तक को भी छोड़ दिया था। दयानन्द का युद्ध सत्य के प्रचारार्थ था, आर्य विद्या के प्रचारार्थ था तथा पाखण्ड के गढ़ को ध्वस्त करने के लिए था इसीलिए उसने अपने लेखन सर्वस्व पुस्तक का नाम सत्य-अर्थ-प्रकाश 'सत्यार्थ प्रकाश' रखा।

युद्ध में दो सेनाएँ आमने-सामने होती हैं, किन्तु यहाँ तो एक ओर पूरा भारत, उसमें फैले विविध मत-मतान्तर, मठाधीश, दिग्गज विद्वान्, धर्म के नाम से प्रचलित विविध पाखण्ड एवं पाखण्डी थे तो दूसरी ओर दयानन्द अकेला ही था। इतना ही नहीं, अपितु धर्म के नाम पर सुदृढ़ ईसाई तथा मुस्लिम सम्प्रदाय भी उसके विरोध में थे।

अंग्रेजी सरकार दयानन्द की स्वदेश भक्ति एवं अंग्रेजी राज्य के विरोध के कारण उसे बागी विद्रोही घोषित कर ही चुकी थी। दयानन्द ने इन सबका मुकाबला अकेले ही किया था। उसने लिखकर, बोलकर तथा क्रियात्मक रूप में भी इन सबका सामना किया।

वह सर्वप्रथम व्यक्ति था जिसने अंग्रेजी न्याय व्यवस्था पर भी प्रश्न उठाया था कि यदि कोई गोरा काले (भारतीय) को मार दे तो उसे उचित दण्ड नहीं दिया जाता। दयानन्द ने सरकार के नमक कानून का भी विरोध किया था कि गरीब जनता पर नमक टैक्स लगाना उचित नहीं। दयानन्द ने धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया, उन्हें जड़ से उखाड़ने का यत्न किया।

इस महासमर में, दयानन्द के हाथ में एक ही शस्त्र था तथा वह था वेद। यही उसका सुदर्शन चक्र था। सामने कोई भी शत्रु टिक नहीं सकता था। इसी प्रकार वेदपाणि दयानन्द के सामने कोई भी नहीं टिक पाया। उसका यह सुदर्शन चक्र अजेय था। भारतीय जनता यहाँ तक कि धुरन्धर विद्वान भी इसे भूल चुके थे। इस पर धूल की पर्तें जम गई थीं तथा कहा जा रहा था कि वेदों को तो शंखासुर चुरा कर ले गया। दयानन्द ने तभी अपने झोले में से वेद की पोथी दिखला कर कहा कि – 'तुम्हारे आलस्य रूपी शंखासुर का वध करके मैंने ये वेद जर्मनी से मंगाया है।'

भारत की यह निधि विदेश पहुंच गई थी। जहाँ पर पाश्चात्य विद्वानों द्वारा उसकी बखिया उधेड़ी जा रही थी। इस वेद विद्या पर नाना प्रकार के आक्षेप किये जा रहे थे। यथा वेद लम्बे समय तक संग्रह किये गये गड़रियों के प्रेमालाप ही हैं। इनमें सुरापान-मांस भक्षण बहुदेववाद तथा यज्ञों में गोवध आदि का विधान है। दयानन्द के सामने भी यह सब कुछ आया किन्तु वह सामान्य मनुष्य नहीं था। वह एक ऋषि था, उसके मेधा बुद्धि थीं। यास्क कहते हैं – **ऋषयो दर्शनात्। स्तोमान् ददर्श इत्यौय मन्यवः।** अर्थात् तत्ववेत्ता को ऋषि कहते हैं। सामान्य व्यक्ति तो किसी भी पदार्थ या घटना को उपरी सतह तक ही देखता है। किन्तु ऋषि उसके वास्तविक परोक्ष स्वरूप को भी पहचान लेता है। वेद मंत्रों के वास्तविक अर्थों को भी, ऋषि बुद्धि थी, तभी तो उसने धर्म तथा ईश्वर के शुद्ध स्वरूप को जाना। उसने यह भी समझ लिया कि वेद विद्या के लोप होने से ही यह सब कुछ पाखण्ड, अनाचार, अत्याचार तथा विविध

प्रकार के भ्रम जनता में फैल रहे हैं। उसने देखा कि – 'वेदों के वास्तविक अर्थ तथा वेदों का सच्चा स्वरूप वह नहीं है जो कि सायणाचार्य आदि भारतीय तथा अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने प्रस्तुत किया है।' दयानन्द ने वेदों को ऋषियों पर सृष्टि के आदि में प्रकट होने वाला ज्ञान कहा। उसने घोषणा की कि वेद सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है, उनमें ज्ञान-विज्ञान भरा है। तथा वे व्यक्ति सर्वविध के लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति करने वाले हैं।

योद्धा दयानन्द के युद्ध के कई क्षेत्र थे। वह अकेला ही इन सभी मोर्चों पर लड़ा तथा विजयी रहा। धार्मिक पाखण्ड विनाश के लिए उसने हरिद्वार में पाखण्ड-खण्डिनी पताका गाड़ दी। नया नाम था तथा नया ही काम था। जो एक अकेला कौपीनधारी दयानन्द नामक साधु कर रहा था। इससे पहले किसी ने भी ऐसा नहीं सुना था।

उसने सामाजिक क्षेत्र में प्रस्तुत कुरीतियों पर भी प्रहार किया। अछूतों को भी आर्य कहा। स्त्री तथा शूद्रों के लिए शिक्षा तथा वेद के द्वार खोले। स्वामी जी की इस दूर दृष्टि पर चकित होकर तब सत्यव्रत सामश्रमी नामक वेद के विद्वान ने कहा था – 'शूद्रस्य वेदाधिकारे साक्षाद् वेदवचनमपि प्रदर्शितं स्वामीदयानन्देन अर्थात् शूद्रों के वेदाधिकार में स्वामी दयानन्द ने साक्षात् वेद मंत्र 'यथेमां वाचं कल्याणी आवदानि जनेभ्या' भी उपस्थित कर दिया। इससे पूर्व शंकराचार्य से लेकर तब तक के किसी भी विद्वान का ध्यान इस मंत्र की ओर नहीं गया था। यही अवस्था स्त्री शिक्षा एवं उनके वेदाधिकार की थी। वेद तो क्या स्त्रियों को सामान्य शिक्षा का भी अकिार नहीं था। दयानन्द ने गार्गी घोषा अपाला आदि का उदाहरण देकर कहा कि स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान ही मन्त्रों की द्रष्टी ऋषिकाएं होती थीं। इस विषय में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र लिखते हैं कि – 'स्त्रियों को दयानन्द का चिर कृतज्ञ रहना चाहिए कि उसने स्त्रियों की मुक्ति का द्वार खोल दिया।'

इस सबके साथ दयानन्द ने उस प्रबल आंधी से भी लोहा लिया जो सम्पूर्ण भारत को अपनी चपेट में ले रही थीं। वह आंधी ईसाईयत, इस्लाम तथा पश्चिमी सभ्यता की थीं। क्रांतिकारी लाजपतराय के पिता नमाज पढ़ते थे, रोजे रखते थे तथा इस्लाम स्वीकार करने मस्जिद में जा भी पहुंचे थे किन्तु बच गये। ईसाई प्रचारक हिन्दू धर्म की कमियाँ निकाल कर लोगों को धड़ाधड़ ईसाई बना रहे थे। दूसरी ओर, पश्चिमी सभ्यता भारत में सुरसा के मुख की भांति फैलती जा रही थी। दयानन्द इन आंधियों के सामने न केवल डटा ही, अपितु उसने इनकी गति को धीमा भी कर दिया।

इस विषय में पीर मुहम्मद यूनिस नामक मुस्लिम विद्वान लिखते हैं – ''ईसाईयत और पश्चिमी सभ्यता के मुद्रक हमलों में हिन्दी स्तुतियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर बांधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द जी की ओर इशारा किया जा सकता है।''

अतीत को देखें तो पता चलता है कि – बड़े-बड़े समाज सुधारक तथा धर्म प्रचारक राज्य का आश्रय लेकर ही आगे बढ़ते हैं। यथा महात्मा बुद्ध तो स्वयं एक राजकुमार ही थे इस कारण भी उन्हें अपने अभियान में पर्याप्त सफलता मिली। इसके पश्चात् सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार करके अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ भेजा। शंकराचार्य को सुघन्ना राजा ने बौद्ध मत के निराकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जिससे बौद्ध धर्म के स्थान पर अद्वैतमत की स्थापना हो गयी। मुहम्मद तो इस्लाम के प्रचारार्थ स्वयं हाथ में तलवार लेकर लड़े थे तथा उन्होंने इसे जेहाद धर्मयुद्ध घोषित किया था। अंग्रेजी काल में भारत में ईसायत के प्रचार-प्रसार में अंग्रेजी राज्य का पर्याप्त सहयोग एवं योगदान रहा।

महर्षि दयानन्द को इस प्रकार का राज्याश्रय प्राप्त नहीं था। इतना ही नहीं अपितु अनेक राजा तो महर्षि दयानन्द के कार्य में विघ्न उपस्थित करते थे तथा उनके प्राण लेने पर भी उतारू रहते थे। राव राजा तेज सिंह ने स्वामी जी पर अपनी तलवार से वार किया ही था जिसे स्वामी जी ने निष्फल कर दिया था।

काशी शास्त्रार्थ में काशी राज स्वयं शास्त्रार्थ के मध्यस्थ थे तथा उन्होंने ही पक्षपात से काशी के पण्डितों को विजयी घोषित किया क्योंकि राजा स्वयं ही मूर्तिपूजक थे। इस प्रकार, दयानन्द अपने प्रचार में राज्याश्रय तो क्या जनता के समर्थन से भी प्रायः अछूते ही रहे। पुनरपि उस वीर योद्धा ने सभी मोर्चों पर अपना संग्राम जारी रखा। उस निर्भीक योद्धा ने हुंकार भरी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कि स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि है। अतः अंग्रेज जल्दी से जल्दी भारत को छोड़ दें। इतना ही नहीं अपितु उसने तो भारत के चक्रवर्ती साम्राज्य की भी कल्पना की।

दयानन्द ने कहा वेदज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में परमेश्वर की ओर से ऋषियों का दिया गया ज्ञान है। अतः स्वतः प्रमाण, पूर्णतः विज्ञान सम्मत है। इस प्रकार उस निर्भीक योद्धा ने इन सभी मोर्चों पर अंगद के समान ऐसा पैर जमाया कि जिसे हटाने का साहस किसी ने नहीं किया।

– बी-266, सरस्वती विहार, दिल्ली-34

विश्व की समस्त आर्य समाजों, जिला सभाओं, प्रान्तीय सभाओं, समस्त आर्य युवा संगठनों तथा अन्य देशों में कार्यरत आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों व आश्रमों के नाम

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की हार्दिक अपील

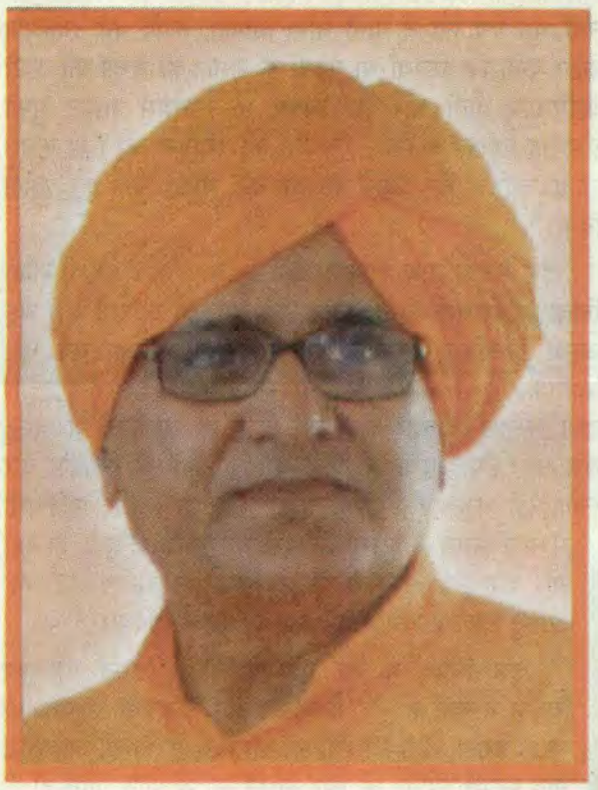

19वीं शताब्दी के आग्नेय पुरुष, प्रातः स्मरणीय, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जब कार्य क्षेत्र में अवतरित हुए उस समय चारों तरफ, हताशा, अन्धकार अंग्रेजों का दमन चक्र, स्वाभिमान का अभाव, धर्म के नाम पर पाखण्ड, सत्य के नाम पर असत्य तथा ज्ञान के नाम पर अज्ञान का साम्राज्य व्याप्त था। ऐसे समय में महर्षि ने जन मानस को नई शक्ति, प्रेरणा तथा दिशा दी और भारत के कण-कण में स्फूर्ति का संचार किया। पाखण्डों का खण्डन कर, कुरान, बाईबिल के प्रभाव पर प्रबल प्रहार कर महर्षि ने राम, कृष्ण और ऋषि-मुनियों की पावन परम्परा को पुनः प्रवाहित किया। वेद ज्ञान की ज्योतिर्मय पताका फहराने के लिए जन-जन में वेद ज्ञान के प्रति आस्था जगाई। वर्तमान युग में यह बात किसी से छिपी नहीं है कि महर्षि दयानन्द जहाँ एक ओर प्राचीनता के पक्षधर और वेदोद्धारक थे वहीं वे दूसरी ओर नवयुग के नेता, वर्तमान के विधाता और भविष्य के पथ प्रदर्शक भी थे।

वेद ज्ञान के प्रसारक महर्षि दयानन्द सरस्वती, पाखण्डों को खण्ड-खण्ड करते हुए प्राचीन ऋषि मुनियों की पावन परम्परा के अजस्र प्रवाह को प्रवाहित करते हुए भारत के कोने-कोने में सत्य ज्योति फैलाते हुए घूमते रहे। अपने अपूर्व ज्ञान, तप, त्याग और अगाध पाण्डित्य से स्वामी दयानन्द ने भारत के गौरव को पुनः प्रतिष्ठित किया तथा 1875 में बम्बई में 'आर्य समाज' नामक संगठन को स्थापित किया।

महर्षि जी ने आर्य समाज की स्थापना किसी संस्था या सम्प्रदाय के रूप में नहीं की थी वरंच वैचारिक क्रान्ति के पुरोधा के रूप में की थी। और जैसा कि आर्य समाज के दस नियमों में स्पष्ट है कि वेद रूपी अग्नि के प्रचार-प्रसार व विस्तार के लिए आर्य समाज का संगठन बनाया गया था। इस अग्नि को व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र और विश्व में प्रज्ज्वलित एवं स्थापित करना था। वेद ज्ञान से मण्डित विचारधारा को अग्नि रूपा बनाकर एक आन्दोलन व क्रांति के रूप में प्रतिष्ठित करने की मंशा महर्षि की थी। अग्नि ही विज्ञान और विकास का मूल है और यही अग्नि बाहर भीतर से मल, गन्दगी, कूड़ा-कर्कट के शमन व दमन करने का एक मात्र साधन भी है। इसी अग्नि को आधार बनाकर महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना एक ऐसे आन्दोलन व क्रांति के रूप में की थी जो धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र में आई विसंगतियों और विषमताओं को नष्ट कर सके और पूरे विश्व को एक ऐसा मंच प्रदान कर सके जिस पर एकत्व भाव से हर इंसान खड़े होकर, सुख, शांति, समृद्धि व आनन्द को समान भाव से महसूस कर सके उसे भोग सके।

आर्य समाज की स्थापना के उपरान्त लगभग 100 वर्ष तक कुरीतियों, पाखण्डों, अज्ञान व अन्धविश्वास को मिटाता हुआ आर्यसमाज विजय प्राप्त करता रहा है। सिन्ध सत्याग्रह, हिन्दी सत्याग्रह, हैदराबाद आन्दोलन, शुद्धि आन्दोलन जैसे अनेकों आन्दोलन करके देश को जगाया है। देश भक्ति, धर्म भक्ति, उच्च चरित्र, कथनी और करनी में एक रूपता आर्य समाज तथा आर्य समाजियों की विशेषता रही है और इन्हीं विशेषताओं के कारण आर्य समाज ने विश्व की विचारधारा को प्रभावित किया है। और यह सब इस लिए हो पाया कि उस समय के आर्यों में अपूर्व नैतिकता, वेदों तथा आर्ष ग्रन्थों का ज्ञान, महर्षि के प्रति असीम निष्ठा, त्याग और लगन थी। **पाश्चात्य विद्वान एड्यूज जैक्सन ने कहा था कि 'आर्य समाज एक ऐसी सार्वभौम अग्नि का स्वरूप ग्रहण कर रहा है जो भविष्य में अमेरिका के शीतल मैदानों, अफ्रीका के विस्तृत देशों, एशिया के प्राचीन पर्वतों और यूरोप के विशाल राज्यों को कुन्दन बनाती हुई सुन्दर वसुन्धरा को नव-जीवन प्रदान कर सार्वत्रिक सुख, अभ्युदय और आनन्द के युग की सूत्रधार बनेगी।'**

इसमें कोई शक नहीं है कि आर्य समाज की स्थापना से लेकर कालान्तर तक आर्य समाज ने अपनी कीर्ति पताका देश तथा विदेश में फहराई है और जो अद्भुत कार्य करके दिखाये हैं वह सर्वविदित है, शिक्षा प्रसार, समाज सुधार, दलितोद्धार और वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्य समाज ने अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किये हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं। लेकिन यह खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि पिछले 50 वर्षों में जो आर्य समाज की स्थिति हुई है वह भी किसी से छिपी नहीं है। आर्य समाज की वर्तमान अवस्था संतोष जनक नहीं है। यद्यपि वह अपने नाम के अनुरूप कार्य नहीं कर पाया तथापि आर्यों के अन्दर उत्तम जीवन शक्ति आज भी विद्यमान है। वे यदि महर्षि दयानन्द के आदर्श और उनके वेदोक्त आदर्शों को अपने सम्मुख रखते हुए कर्मक्षेत्र में उतरें तथा अपने जीवनों को सच्चा आर्य जीवन बनाने का प्रयत्न करें तो अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है। वे अब भी उठ सकते हैं और संसार के आगे उच्च जीवन का आदर्श रख सकते हैं। वर्तमान परिस्थितियों में पूरे विश्व को नई दिशा देने का दायित्व आर्य समाज पर आता है क्योंकि समाज में व्याप्त छुआछूत, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, गोहत्या, नारी उत्पीड़न जैसी समस्याओं से समाज त्रस्त है और इन बुराईयों की तरफ किसी संगठन या संस्था का ध्यान नहीं है और न ही इन बुराईयों के विरुद्ध कोई आवाज उठाता है। आम व्यक्तियों की निगाहें आर्य समाज के ऊपर लगी हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित पथ के पथिक बनकर आज भी हम सामाजिक बुराईयों से त्रस्त समाज को मुक्ति दिला सकते हैं और जिसकी आज महती आवश्यकता भी है। लेकिन आज हम अपने लक्ष्य और उद्देश्य से भटक गये हैं। आर्य समाज में कार्य तो बहुत हो रहा है लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर उसे दिखा पाने में हम असमर्थ रहे हैं। हमारा सारा कार्य बहिर्मुखी न होकर अन्तरमुखी हो रहा है और हम सब आम जनता के बीच नहीं जा पा रहे हैं। आज आवश्यकता है क्रांतिकारी चरित्र, तेजस्वी स्वरूप और प्रभावशाली ढंग से एकजुट होकर कार्य करने की, तथा लोक कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से ज्ञान सम्मत, तर्कपूर्ण वैदिक सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने की तथा पूरे विश्व के आर्यों को समाज के त्रस्त लोगों को साथ लेकर आर्य समाज के संगठन को व्यापक स्तर पर खड़ा करने की।

आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य, नेता, उपदेशक, संन्यासी आदि को आदर्श उपस्थित करने की चिंता होनी चाहिए ताकि भावी पीढ़ी इसे अपनी श्रद्धा भरी आंखों में कैद करके सर्वदा आदेश को ही लक्ष्य के रूप में देखें। इसलिए तपोमय जीवन बनाकर, दिखावा, पदलिप्सा, जीवन का बनावटीपन आदि छोड़कर ही हम सच्चे अर्थों में आर्य बन पायेंगे। आज समस्याओं से निपटने के लिए हमारा एक विशाल संगठन है। हम यह सोचें कि यदि अकेला दयानन्द इनसे भी भीषण परिस्थितियों से जूझकर युग परिवर्तन कर सकता है तो ऐसे आदर्श गुरु के अनुयायी आज अकर्मण्य क्यों हैं? हमें यह सोचना चाहिए कि महर्षि जी ने कभी राजनीति नहीं की, उन्होंने कभी सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया उन्होंने जो बात कही वह सम्पूर्ण विश्व के लिए कही तथा उन्होंने कभी असत्य का

अगले पृष्ठ पर जारी है

दानी महानुभावों से अपील

आर्य समाज को एक तेजस्वी, सक्रिय तथा उपयोगी आर्य समाज बनाने के लिए सार्वदेशिक सभा ने एक ठोस योजना तैयार की है जिसके द्वारा विश्व की प्रत्येक आर्य समाज, वैदिक संस्थाओं, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं को सक्रिय किया जायेगा। सभा पदाधिकारियों के अतिरिक्त, समर्पित कार्यकर्ता, उपदेशक महानुभावों को क्षेत्र बांटकर कार्य सौंपा जायेगा कि वे आर्य समाजों में जाकर उन्हें नई कार्यशैली से अवगत करायें तथा उन्हें प्रेरित करें। नवयुवकों तथा बच्चों के लिए उपयोगी साहित्य, नये वर्ष के आकर्षक कलेण्डर एवं अन्य उपयोगी वस्तुएं तैयार कराई जायेगी जो सार्वदेशिक सभा में सभी लोगों के लिए उपलब्ध रहेगी। लाखों नये लोगों को आर्य समाज का सदस्य बनाया जायेगा जिसमें महिलाओं तथा नवयुवकों को प्राथमिकता से सम्मिलित किया जायेगा। हिन्दी का वेद भाष्य नये रूप में प्रकाशित करने के लिए चारों वेदों को कम्प्युटरीकृत करके प्रकाशित करने की महत्त्वाांक्षी योजना दीपावली से प्रारम्भ की जा रही है। सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा महर्षि के अन्य छोटे-बड़े ग्रन्थों को शीघ्र प्रकाशित किया जायेगा। इन सभी योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए आप सभी के सकारात्मक सहयोग की आवश्यकता होगी। हमारी सभी दान दाताओं से हार्दिक अपील है कि आप सब दिल खोलकर दयानन्द के मिशन को और वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए दान देकर हमारा उत्साह बढ़ायें और यश के भागी बनें।

– स्वामी आर्यवेश, सभा प्रधान

पृष्ठ-8 का शेष

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की हार्दिक अपील

समर्थन नहीं किया। फिर हम ऐसे क्यों हैं? हम कैसे भूल गये कि महर्षि जी जब बिजली बनकर गिरते थे तो ढोंग पाखण्ड जलकर भस्म हो जाते थे और प्रकाश के आवरण में सामाजिक बुराईयों का अन्धकार नष्ट हो जाता था। लगन, त्याग, तपस्या से ही महान लक्ष्य पूर्ण होते हैं।

आर्य समाज के कार्यों में एकरूपता रखने के लिए निम्नलिखित कार्य योजना प्रस्तुत की जा रही है। जिसे प्रत्येक स्तर पर क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

1. आर्य समाज के मुख्य दिवसों जैसे महर्षि निर्वाण दिवस, बोध दिवस, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, महात्मा हंसराज जन्म दिवस, पं. लेखराम बलिदान दिवस, गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मोत्सव, राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस, भगत सिंह बलिदान दिवस, आर्य समाज स्थापना दिवस, लाला लाजपत राय, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, महात्मा नारायण स्वामी आदि के जन्मोत्सव, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, राम नवमी, श्रावणी पर्व तथा अन्य मुख्य पर्वों अथवा दिवसों पर एक साथ पूरे देश तथा विदेशों में उत्साहपूर्ण ढंग से कार्यक्रम आयोजित किये जायें। प्रयास किया जाये कि कार्यक्रमां में सम्मिलित होने वाले समस्त व्यक्तियों की वेशभूषा एक समान हो तथा गले में ओ३म् पट्ट हों। उस दिन लोग विशाल स्तर पर यज्ञ हो और सब परिवार सहित उसमें सम्मिलित हों। तत्पश्चात एक विद्वान का प्रभावशाली उद्बोधन रखा जाये। इसके पश्चात् एक रैली के रूप में सभी अपने क्षेत्र के बाजारों, गलियों में जलूस निकालें जिसमें हाथों में ओ३म् के ध्वज व बैनर आदि लेकर अधिक से अधिक लोग चलें तथा नारों और जयघोष से सारे क्षेत्र को गुंजाते रहें। इसके साथ ही ज्वलन्त समस्याओं तथा सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध बैनर हों तथा नारे लगाते हुए सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन-जागरण तथा इनसे बचने के उपाय भी बताते चलें। किसी एक स्थान पर बाजार के चौराहे या पार्क आदि में एकत्र होकर अपने पर्व और सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध व्याख्यान हो। अपने पर्वों को मनाने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन लाने का उद्देश्य भी रखा जाये। बुराईयों से त्रस्त लोगों को लगे कि आर्य समाज हमारी अपनी संस्था है और यह हमारे साथ है। समाज में एक सन्देश जाना चाहिए कि आर्य समाज अन्याय व बुराईयों के विरुद्ध खड़ा हो गया है। इन सब व्यवस्थाओं को सुचारू ढंग से चलाने के लिए आर्यवीर दल, आर्य युवक परिषद् तथा आर्य युवक समाज के नव युवकों को जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए। हमें प्रयास करना चाहिए कि यज्ञ सहित समस्त कार्यक्रम आर्य समाज की चार दीवारी से बाहर निकल कर किये जाये। यदि लोग आर्य समाज में नहीं आते तो हमें उनके दरवाजे पर जाना होगा। विचार कीजिए यदि एक ही दिन सारे देश में, देश के हर शहर में और शहर के प्रत्येक क्षेत्र में इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हों तो कोई कारण नहीं है कि लोग आर्य समाज से प्रभावित न हों और इसके साथ ही सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आम लोगों की एकजुटता न हो।

2. सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध तथा गोहत्या आदि के विरुद्ध किसी विशेष अवसर पर पूर्ण तैयारी करके आर्य समाज के बैनर तले तथा सम्बन्धित बुराईयों के विरुद्ध बैनर आदि बनाकर जुलूस निकालें, बाजारों में गलियों में नारे लगाते हुए जिला मुख्यालय, तहसील मुख्यालय तथा गावों में प्रदर्शन करें, धरना दें तथा गोरक्षा तथा सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आवाज बुलन्द करें। इस धरना तथा प्रदर्शन में भी परिवार सहित अपने मित्रों तथा आस-पड़ोस के लोगों को लेकर जायें तथा लोगों को संकल्प दिलवायें कि सम्बन्धित बुराई को अब बर्दाश्त नहीं करेंगे।

3. वेद प्रचार से सम्बन्धित पर्वों पर अपने उत्सवों अथवा श्रावणी पर्व आदि पर जहां आर्य समाज मंदिरों में प्रभावशाली कार्यक्रम हों वहीं क्षेत्र के प्रभावशाली व्यक्तियों व क्षेत्रीय नेताओं को अवश्य आमंत्रित करें तथा प्रातःकाल प्रभातफेरी अवश्य निकालें।

4. देश की स्वतन्त्रता तथा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में जिन क्रांतिकारियों और महापुरुषों ने अपना जीवन बलिदान किया है ऐसे व्यक्तियों के बलिदान दिवस पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन करें और जोरदार जुलूस निकालकर युवाओं में क्रांति के बीज बोयें। उनसे सम्बन्धित पुस्तकें तथा ट्रैक्ट आदि भी वितरित करें जिससे उनके प्रेरणादायी जीवन की जानकारी आमजनों को हो सके।

5. महिला दिवस पर 8 मार्च को कन्या भ्रूण हत्या, महिला उत्पीड़न के विरुद्ध झण्डे-बैनर लेकर जुलुस निकालें जिसमें महिलाओं की उपस्थिति विशेष हो। इस अवसर पर धरना तथा प्रदर्शन का जोरदार आयोजन किया जाये जिसमें कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा तथा महिला उत्पीड़न के विरुद्ध जन-जागरण किया जाये तथा महिलाओं को आर्य समाज से जोड़ने का प्रयास किया जाये।

6. शिवरात्रि (ऋषि बोध दिवस) के अवसर पर धार्मिक क्षेत्र में पनप रहे पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडम, रुढ़िवाद आदि कुरीतियों के विरुद्ध जन-चेतना पैदा करने के लिए जुलूस निकाले जायें तथा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जातिवाद, साम्प्रदायिकता आदि बुराईयों के विरुद्ध जन चेतना जाग्रत की जाये।

इन सब कार्यक्रमों पर धरना, प्रदर्शन व जुलूस आदि निकालने के पीछे भावना है कि पूरे देश तथा विश्व में एक सन्देश जायेगा कि पूरे विश्व की आर्य समाज एक मुद्दे को लेकर सक्रिय हैं। संगठन की शक्ति को बढ़ाने के लिए तथा एकजुटता स्थापित करने के लिए इस प्रकार के प्रयास अत्यन्त आवश्यक है। इसमें आर्य समाज की एक विशेष पहचान बनेगी।

जब हम आर्य समाजी अपने उत्सव, समारोह तथा विविध अवसरों पर शोभा यात्रा निकालते है। तो यह ध्यान रखा जाये कि अपने महापुरुषों से सम्बन्धित नारे व वैदिक धर्म के नारे लगाने के साथ-साथ ज्वलन्त मुद्दों को लेकर भी नारे लगाये जायें तथा उनसे सम्बन्धित बैनर भी साथ लेकर चलें। इससे लाखों लोगों तक आर्य समाज का सन्देश जायेगा कि आर्य समाज इन मुद्दों पर जागरूक है, समाज को जगाना चाहता है। यदि हम यह सब कर पाये तो हमारा उत्सव मनाना सार्थक हो जायेगा।

जब भी कोई छोटा या बड़ा कार्यक्रम हम करें तो उसकी तैयारी से लेकर सम्पन्न होने तक प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं वर्तमान में सर्वाधिक प्रभावी सोशल मीडिया के माध्यम से अपने कार्यक्रम का प्रचार करें। जो कार्यक्रम हो रहा है उसे फेसबुक आदि पर डालकर लाखों लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। हम अपने कार्यक्रमों के लिए प्रेस से सम्पर्क नहीं करते, भविष्य में हम जब भी कार्यक्रम करें, अखबारों में, मैगज़ीन में तथा टीवी आदि को अपनी सूचना अवश्य भेजें तथा चित्र भी दें। पूरे देश में इस प्रकार की गतिविधियों से बहुत शीघ्र आर्य समाज छा जायेगा। हमारी पूरी कोशिश होनी चाहिए कि हम आर्य समाज से बाहर निकलकर अपने कार्यक्रम करें। प्रातः तथा सायंकाल सैर करने के लिए पार्क में आने वाले लोगों को अपने कार्यक्रमों की जानकारी दें तथा आर्य समाज के जो नवयुवक योग से परिचित हैं वे वहां योग की कक्षायें लगायें तथा धीरे-धीरे विधिवत आर्य समाज के बैनर के नीचे यह कार्यक्रम सम्पन्न हों। वहां आने वालों को अपनी संस्कृति तथा आर्य समाज से भी परिचित करायें।

विभिन्न अवसरों तथा दीपावली आदि पर्वों पर लोग भेंट स्वरूप मिठाई आदि देते हैं। सब जानते हैं कि बाजार में मिठाई के नाम पर जहर दिया जा रहा है। अगर देनी ही है तो घर पर बनी हुई मिठाई दें लेकिन साथ ही वैदिक साहित्य जैसे 'सत्यार्थ प्रकाश', 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' आदि पुस्तकें उपहार स्वरूप अवश्य प्रदान करें। विवाहादि अवसरों पर भी रिश्तेदारों व प्रतिष्ठित व्यक्तियों को साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। स्थानीय दुकानदारों से यदि साहित्य उपलब्ध नहीं हो तो सार्वदेशिक सभा से साहित्य मंगाया जा सकता है। नये वर्ष के कलेण्डर के लिए धन संग्रह करके अपने परिचितों व सम्बन्धियों के घर जाकर स्वयं कलेण्डर टांगे तो बहुत बड़ा कार्य होगा। नये वर्ष के कलेण्डर भी सार्वदेशिक सभा में उपलब्ध है।

महर्षि का निर्वाण हमें जगाने, श्रेष्ठ व्रतों संकल्पों को दुहराने की प्रेरणा देता है। अतः आर्यो! उठो, जागो और अपने कर्तव्यों का बोध करो, आर्य समाज के नेताओं कर्णधारों तथा कर्यकर्ताओं को मिलकर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि आर्य समाज का विस्तार पहले से अधिक होने पर भी हमारा यथोचित प्रचार क्यों नही हो पा रहा है। इसलिए आर्यो! आओ एकबार फिर एकजुट होकर इस महर्षि निर्वाण दिवस पर हम संकल्प करें कि हम सब योजनाबद्ध ढंग से महर्षि के मिशन को पूर्ण करेंगे।

आर्य महानुभावों से सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की एकता प्रयासों के लिए मार्मिक अपील

सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद का उत्तरदायित्व अत्यन्त श्रद्धा तथा विश्वास के साथ जब से आप सबने मुझे प्रदान किया है मैं अपने साथियें के साथ निरन्तर समर्पित भाव से अत्यन्त परिश्रम के साथ आप सबके विश्वास को मूर्त रूप देने में लगा हुआ हूँ और पहले दिन से ही आर्य समाज की एकता के लिए प्रयास करना मेरी प्राथमिकता रही है। समय-समय पर अन्य पक्षों के सम्मानित नेताओं से सम्पर्क के साथ-साथ, मिलकर विशेष आग्रह के साथ संगठन को मजबूती प्रदान करने और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने के उद्देश्य से हर सम्भव प्रयास करता रहा हूँ। इसके अतिरिक्त किसी अन्य विशिष्ट व्यक्ति ने इस सम्बन्ध में यदि प्रयास किया है तो उनका भी समर्थन हमने किया है, लेकिन सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

महर्षि दयानन्द के अप्रतिम बलिदान से प्रेरणा लेकर आइये! हम अपने अन्दर झांके और अपने मन को टटोल कर देखें कि हम परस्पर मन-मुटाव और मतभेद रखते हुए क्या आर्य समाज की यथोचित सेवा कर पायेंगे।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।।

आदि संगठन सूक्तों के मंत्रों का पाठ क्या हमारी आत्मा को प्रेरित नहीं करता कि हमें किसी भी प्रकार से गिले-शिकवे तथा मन-मुटाव समाप्त करके एक मंच पर इकट्ठे हो जाना चाहिए। क्या महर्षि दयानन्द का बलिदान हमें प्रेरित नहीं करता। आर्य जनता, नेताओं की आपसी फूट, झगड़ों और अदालतों में चल रहे मुकदमों से परेशान है। यदि पूरे देश और दुनियां का आंकड़ा निकाला जाये तो एक वर्ष में करोड़ों रुपया हम मुकदमों की भेंट चढ़ा देते हैं यह हम सबके लिए बहुत बड़ी लानत की बात है। दुनियां को मार्ग दर्शन देकर सही रास्ते पर लाने का दावा करने वाला आर्य समाज और आज उसके हम सब नेता किस स्तर तक भटक गये हैं यह बड़ी चिन्ता की बात है। मैं अपने हृदय से सभी आर्य नेताओं तथा आर्यजनों से प्रार्थना करता हूँ कि आप महर्षि के बलिदान दिवस पर एक संकल्प अवश्य करें कि हमें कोर्ट कचहरी के झगड़े बन्द करने हैं और स्वयं आपसी समझ पैदा करके इन विवादों को निपटाना है। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि जिस दिन हम अपने मनों के दरवाजे खोलकर कोर्ट-कचहरी के दरवाजे बन्द कर देंगे तो निश्चित रूप से हम एक हो जायेंगे, संगठित हो जायेंगे। ऐसी कोई समस्या नहीं है जो आपसी बात-चीत से हल न की जा सके। आशा है सभी आर्यजन और आर्य नेता इस पर गम्भीरता से विचार करेंगे। हमारी यही स्वामी दयानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

महर्षि दयानन्द की इच्छा पूर्ण करने का व्रत लो

- आर्या मीरायति

हमारे वैदिक धर्म में त्यौहारों का बहुत महत्व है। हम इनको पर्व भी कहते हैं। पर्व शब्द पृ-पूरने धातु से बना होने के कारण इसका अर्थ उल्लास पूर्वक मनाने का है। अर्थात् जिस दिन कोई भी पर्व हम मनाते हैं उस दिन हमारे मन के भीतर अत्याधिक उल्लास होता है। पर्व मनाने से हमारी संस्कृति की रक्षा होती है। ये पर्व प्रतिवर्ष आते हैं और हमें नई-नई उमंगे नए-नए मार्ग निर्देश करते हैं। हम इनको मनाते हुए अपने प्राचीन गौरव को अनुभव करते हैं और हमारे नवयुवकों तथा नवयुवतियों को प्राचीन इतिहास की झलक मिलती हैं जिससे वे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

जिस दिन कोई भी पर्व हो हमारे सबके मन उमंग से भर जाते हैं। सब एक दूसरे से मिलते हुए प्रसन्नता प्रगट करते हैं। इसी कारण दफ्तरों में बैंकों में तथा पोस्ट आफिस में छुट्टी कर दी जाती है ताकि सब लोग अपने-अपने परिवार में अपने बाल बच्चों में बैठकर मिलकर आमोद-प्रमोद से प्रत्येक पर्व को मना सके। इसलिए हमारे भारतवर्ष में क्या विदेशों में भी जो भारतीय रहते हैं वह सब पर्वो को मनाते हैं।

परन्तु प्रत्येक मानवों का पर्व मनाने का ढंग कुछ अलग-अलग होता है। वे पुरातन काल की कथाओं के अनुसार जो उनके पिता पितामह से चली आ रही है मानते हैं चाहे वह प्रथा अच्छी हो या बुरी, चाहे लाभप्रद हो अथवा हानिकर परन्तु उसी बेढ़ंगी चाल से मनाते चले आ रहे हैं। मैंने कई स्थानों पर स्वयं देखा है कई लोग छोटे-छोटे त्यौहार मनाते हैं, जैसे नाग पूजा, दुर्गापूजा, होई माता का पूजन, लक्ष्मी पूजन तथा करवाचौथ का व्रत इत्यादि-इत्यादि।

हमारे मुसलमान भाई ताजिए तथा ईद, बकरीद मनाते हैं जिसमें रोते पीटते तथा बकरे काटते हैं। एक ओर तो जीवन हिंसा करते हैं दूसरी ओर खुशियां मनाते हैं यह कोई पर्व नहीं त्योहार भी नहीं है जिससे परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि की आत्महत्या हो ऐसा जघन्य पाप और क्या होगा और फिर यह पर्व भी कैसा उसे तो कुछ और ही कहना चाहिए।

परन्तु वैदिक पर्व कितने ऊँचे हैं जिनमें सबसे प्रथम यह किया जाता है जो परोपकार के लिए होता है उसमें अपना कोई भी स्वार्थ नहीं होता बस एक ही विचारधारा होती है वह यह कि अच्छी सुगन्धि सबको मिलनी चाहिए। फिर देखो हमारी आर्य पर्व पद्धति में प्रत्येक पर्व पर विशेष मन्त्रों द्वारा आहुतियां दी जाती हैं जो उस पर्व के लिए आवश्यक होती हैं।

हमारे पर्व कितने अच्छे शिक्षाप्रद हैं जैसे मकर संक्रांति, बसन्त पंचमी, विजयदशमी, कृष्णाष्टमी, रामनवमी, दीपावली, रक्षा बन्धन इत्यादि। हम आर्य लोग इन सब पर्वो को मनाते हुए यज्ञ करते हैं। दान देते हैं। चाहे आर्य समाज में मनाए या अपने-अपने घरों में परन्तु ये यज्ञ दान, मिष्ठान बांटना आवश्यक समझते हैं। प्रत्येक पर्व हमें नया-नया संदेश देता है।

आज जिस पर्व को हम मना रहे हैं उसके दो पहलू हैं। एक तो प्रत्येक स्थान पर दीपक जलाए जा रहे हैं दूसरे स्वामी दयानन्द जी का निर्वाण दिवस मनाया जा रहा है। आज के दिन बहुत सारे लोग लक्ष्मीपूजन करते हैं। ऐसे लोगों की यह विचारधारा है कि इस दिन यदि लक्ष्मी की पूजा की जाए तो घर में बहुत धन आ जाता है। एक मनुष्य ने ऐसा किया कि रात्रि को लक्ष्मी पूजन करके घर का दरवाजा खुला रख दिया। लक्ष्मी तो न आई कोई चोर आकर चोरी करके ले गया।

हम आर्य लोग ऐसी बातों पर विश्वास नहीं करते, हम कहते हैं लक्ष्मी पूजा करने से नहीं आती, लक्ष्मी तो पुरुषार्थ करने से आती है इसलिए पुरुषार्थ करके लक्ष्मी को प्राप्त करें। दूसरे पूजा शब्द जो है वह पुज धातु से बना है जिसका अर्थ सत्कार करना लक्ष्मी का सत्कार अर्थात् पूजा करके उसका आदर करना चाहिए। जो लोग लक्ष्मी का पूजन करते हैं वहीं लोग रात्रि को बैठकर जुआ खेलते हैं जिससे किसी की जीत तो किसी की हार भी हो जाती है। तब जीतने वाले तो हंसते हैं और जिनकी हार होती है वह रोते पीटते हैं। इन लोगों के समक्ष लक्ष्मी पूजा का फल आ जाता है फिर भी वह पुरानी परम्परा को नहीं छोड़ते।

पाठकवृन्द ऐसी लक्ष्मी पूजा से क्या लाभ है? हम आर्य लोग असली अर्थों में लक्ष्मी की पूजा करना जानते हैं हम लोग दीपावली में निर्धन लोगों में मिठाई बांटते हैं जिससे हमें बहुत ही प्रसन्नता होती है।

दूसरा इसके साथ आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज का निर्वाण दिवस मनाते हैं इसी दिन महर्षि जी ने अपनी इहलीला पूर्ण की। उनका जीवन उस दीपक की भांति था जो अपनी बत्ती और तेल जलाकर दूसरों को प्रकाश दिया करते हैं। युगों की प्रतीक्षा के बाद ऐसी आत्मा का धरा पर प्रादुर्भाव हुआ करता है वे चले जाते हैं किन्तु बत्ती की भांति अपनी सुगन्धि लोक में छोड़ जाया करते हैं।

स्वामी जी महाराज की सुगन्धि देश-विदेश में फैल रही है। जो-जो काम उन्होंने अपने जीवन में किए उसकी प्रशंसा आज विरोधी लोग भी कर रहे हैं। महर्षि जी ने जीवन में वह कार्य किए जो कोई विरला व्यक्ति ही कर सकता है उन्होंने अन्धकार में गिरे लोगों को निकालकर वेद ज्ञान का प्रकाश दिया। उस समय लोग कहा करते थे स्त्री और शूद्र को वेद नहीं पढ़ने चाहिए परन्तु दयानन्द पृथ्वी पर प्रथम महर्षि थे जिन्होंने यह उद्घोष किया था कि जिस प्रकार सूर्य की धूप लेने का सबको पूर्ण अधिकार है चन्द्रमा की चांदनी से सब लाभ उठा सकते हैं, गंगा की निर्मल धारा में सब स्नान कर सकते हैं, वस्त्र धो सकते हैं, अपनी प्यास जल से बुझा सकते हैं। उसी प्रकार वेद जो प्रभु की पवित्र वाणी है उसे सब पढ़ सकते हैं। महर्षि सदियों से चली आ रही पुरानी गली सड़ी कुरीतियों को दूर करने में लगे रहे। अन्ततः विजय श्री उनके चरण कमलों में लोटने लगी वह प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के उपरान्त प्रभु द्वारा भेजी हुई मृत्यु को हंस-हंस कर गले लगाते हुए आज के दीपावली के दिन यह शब्द उच्चारण करने लगे। प्रभु तूने अच्छी लीला की प्रभुवर तेरी इच्छा पूर्ण हो।

अब हमारा सबका क्या कर्त्तव्य है? हम उस देव दयानन्द की इच्छा पूर्ण करने में लगे रहें। उन्होंने अपनी मूक भाषा में कहा था आर्यो सबके लिए दरवाजे खुले रखना और शिक्षा, शुद्धि तथा शास्त्रार्थ द्वारा मेरे बताए हुए वेद मार्ग की ओर अन्य लोगों को भी लगाने के लिए प्रयत्नशील रहना। तो आओ आर्यो! हम सब आज दीपावली के इस शुभ अवसर पर मिलकर प्रतिज्ञा करें कि ऋषि ने तो प्रभु की इच्छा पूर्ण की थी अब हम उनकी इच्छा पूर्ण करें।

दयानन्द का प्रकाशमय जीवन दर्शन

– दीपक कुमार छिल्लर

ब्रह्मचर्यव्रत को जीवन भर निभाया,
सत्यता के अर्थ को लोगों तक पहुंचाया।
मूलशंकर तुझे मिला कितना सुन्दर नाम,
करते थे नित्य स्वाध्याय, व्यायाम, प्राणायाम।
चार स्तम्भों पर टिका कर किया प्रयास,
कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म, ब्रह्मचर्य तथा संन्यास।
लाला हंसराज व श्रद्धानन्द ने स्वामी जी के स्वप्न को किया साकार।
दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज व गुरुकुल कांगड़ी से शिक्षित निकले अपार।।1।।

माँ थी यशोदाबाई व पिता थे करशन जी लालजी तिवारी,
कि बेटा मत करो मूर्ति पूजा मान लो बात हमारी।
शिवरात्रि के पावन पर्व वाली रात को जागरण चल रहा था,
लेकिन मूलशंकर के मन में एक प्रश्न खुल कर मचल रहा था।
रात्रि समय मूलशंकर ने देखा चूहा प्रसाद ग्रहण करने आया,
स्वयं भगवान इस चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर पाये यह मतलब पाया।
घर छोड़कर सत्य ज्ञान के लिए अपनी जिन्दगी के सफर को मोड़ते है।
हर घटना में जीवन-मरण की गहराई को जोड़ते हैं।।2।।

बहुत भटकने के बाद जीवन का नया मोड़ आया,
वेद-वेदांगों, पाणिनी व्याकरण में सिद्धहस्त विरजानन्द को पाया।
गुरु दक्षिणा में कुछ संकल्प गुरु विरजानन्द जी को दिए,
हरिद्वार कुंभ मेले में पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराये।
ढेरों अपमान, कलंक सनातनधर्मी हिन्दुओं से झेले,
पाखण्ड का खण्डन करने चल पड़े बिलकुल अकेले।
''संन्यासी योद्धा'' का दलितोद्धार के पक्ष में पहला नाम था।
स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह हो, सती प्रथा निषेध वाला पैगाम था।।3।।

दयानन्द का प्रकाशमय निर्वाण दीपावली के दिन हुआ,
नन्हीं नामक कलंकिनी के कहने पर जगन्नाथ ने दूध में विष दिया।
जब स्वामी दयानन्द को पता चली इनकी चाल,
जगन्नाथ को रुपये देकर कहा बुरे वक्त को टाल।
इलाज करवाया पर जहर का असर कम नहीं हुआ,
अंग्रेजी हुकूमत के बहकावे में अस्पताल प्रशासन ने नहीं छुआ।
सन् 1883 की दीपावली की संध्या पंचतत्व में समा गये।
स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वदेशोन्नति को बता गये।।4।।

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का सिद्धान्त अपनाने को कहा,
पाखण्ड-खण्डन के समय दुःख पीड़ा को सहा।
अंतिम शब्दों में ''प्रभु तूने अच्छी लीला की,
आपकी इच्छा पूर्ण हो'' यही कहा।
सारे संसार को श्रेष्ठ मानव बनाओ,
एकजुटता, एकरूपता आर्य धर्म का मानवीय गुण अपनाओ।
यही है ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का सार।
भारतीय संस्कृति में करो इसका गौरवमय प्रसार।।5।।

वर्तमान समय में पुकारता है मानवीय समाज,
आचरण करेंगे व जायेंगे नित्य हम आर्य समाज।
वैदिक मंत्रों से यज्ञ द्वारा करते प्रभु का गुणगान है,
आर्य समाज की पूरे विश्व में अपनी पहचान है।
मूर्ति पूजा तथा पाखण्ड का खण्डन करना,
सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान का आबंटन करना।
अंधकारमय समाज को जो प्रकाशमय रास्ता दिखलाता।
महर्षि दयानन्द सरस्वती का वह आर्य समाज कहलाता।।6।।

– म. नं.-1022 ग्राम सभा कालोनी सरदार पटेल झील के पास
पूठकलां, दिल्ली-110086
मो.-9990422051

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर

सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में

विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड-खण्डिनी पताका का आरोहण

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अतः सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन-चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने-कोने से आर्यजन अपनी-अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा''** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के नाम भेजने की कृपा करें।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान-सार्व.सभा

स्वामी विव्यानन्द
प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल

स्वामी प्रणवानन्द
कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल

प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री-सार्व.सभा

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष-सार्व.सभा

गोविन्द सिंह भण्डारी
प्रधान-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड

सुखदेव वर्मा
कोषाध्यक्ष-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड

दयाकृष्ण काण्डपाल
मंत्री-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड

इं. प्रेम प्रकाश शर्मा
प्रधान, आर्य समाज देहरादून

डॉ. वीरेन्द्र पंवार
प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

पुस्तक समीक्षा

पौराणिक समाज में फैली अवैदिक परम्पराओं में मृत्यु के उपरान्त दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु 'गरुड़ पुराण'' की कथा का प्रचलन आम हो गया है। पुराणों के जाल में हिन्दू समाज इस कदर उलझ गया है कि वेदादि शास्त्रों के प्रति उसकी रुचि, विश्वास और श्रद्धा निरन्तर ह्रास को प्राप्त हो रही है और जीवन अवैदिक औपचारिकताओं के बोझ के नीचे दबता चला जा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक ''शाश्वत जीवन'' जिसने एक अनमोल निधि के रूप में आकार लिया है और हिन्दू समाज में व्याप्त आडम्बर, पाखण्ड, अन्धविश्वास की पोल खोलकर रख दी है।

''शाश्वत जीवन'' का आद्योपान्त अवलोकन करने के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि एक मिथ्या अवधारणा के विकल्प में तथा वेदादि शास्त्रों के आलोक में लिखी गई यह पुस्तक असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने में पूर्ण समर्थ है तथा रूढ़ियों, आडम्बरों और अन्धविश्वासों के रूप में जो केंचुली हमारी प्राचीन परम्परा, ज्ञान और विज्ञान को ढंके हुए है उस केंचुली को विद्वान लेखक ने उतार फेंका है। अनेक अन्य वैदिक ग्रन्थों के उद्धरण प्रस्तुत कर तथा अनेकों मनीषियों के प्रवचनों का सार देकर ''गरूड़ पुराण'' परलोक का सत्य नहीं है सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है।

सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य डॉ. लक्ष्मणदास आर्य के स्वाध्याय प्रेमी विद्वान पिताश्री स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती जी (मूलचन्द्र आर्य) ने अपने जीवन काल में इस पुस्तक का प्रणयन किया था जो किन्हीं कारणों से उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं हो सकी थी। लेकिन उनके सुयोग्य सुपुत्र जो कि अत्यन्त निष्ठावान कर्मठ, जुझारू, जागरूक और सक्रिय आर्य समाजी है के विशेष प्रयासों से इस पुस्तक का प्रकाशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कराया है। इस समाजोपयोगी पुस्तक को सामने लाने में उनका प्रयास प्रशंसनीय है अतः उन्हें साधुवाद देता हूँ। बहुरंगी आवरण में 184 पृष्ठ की ''शाश्वत जीवन'' नामक पुस्तक जो अत्यन्त अल्प मूल्य मात्र 100/- रुपयें में प्राप्त होगी, आत्मविद्या के जिज्ञासुओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी तथा समाज को उन्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लायेगी ऐसी आशा करता हूँ।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

1. **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,** ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

2. **डॉ. लक्ष्मण दास आर्य,** लक्ष्मण रेडियो, स्टेशन रोड, जिला-अशोक नगर-473331 (मध्य प्रदेश)

मो.: 9425133481

- स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

आर्य भजनोपदेशक परिषद् सम्मेलन का आयोजन

1 से 3 जनवरी, 2016 को

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, जिला-रोहतक (हरि.) में

आर्य समाज के सम्माननीय भजनोपदेशकों के संगठन, आर्य भजनोपदेशक परिषद् का वार्षिक सम्मेलन आगामी 1 से 3 जनवरी, 2016 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम ग्राम टिटौली जिला-रोहतक (हरि.) में आयोजित किया जा रहा है। समस्त आर्य भजनोपदेशकों से अनुरोध है कि वे 31 दिसम्बर, 2015 सायं तक सम्मेलन स्थल पर पहुंचकर संगठन के प्रति निष्ठा का परिचय दें। इस अवसर पर बुजुर्ग भजनोपदेशकों का सम्मान भी किया जायेगा।

– निवेदक, कैलाश कर्मठ, मंत्री आर्य भजनोपदेशक परिषद्

हिण्डौन सिटी में चार आर्य विद्वानों का सम्मान

हिण्डौन सिटी, सन् 1983 से आर्य विद्वानों को सम्मानित करने के क्रम में इस वर्ष भी श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी (राज.) द्वारा चार आर्य विद्वानों का भावभीना सम्मान किया गया। 32वाँ श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य सम्मान आचार्य डॉ. श्री रामनाथ वेदालंकार के पुत्र श्री विनोदचन्द्र विद्यालंकार, ज्वालापुर, तृतीय वेदरत्न स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती साहित्य सम्मान श्री सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), प्रथम आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार साहित्य सम्मान उड़िया-अंग्रेजी के लेखक श्री प्रियव्रतदास, भुवनेश्वर को तथा प्रथम श्री हरगोविन्द सत्यवती आर्या न्यास द्वारा प्रथम श्री हरगोविन्द सत्यवती आर्या स्मृति सम्मान श्री ब्रजपाल शर्मा 'कर्मठ', कम्हेड़ा को छह प्रान्तों से आये आर्य जनों की श्रद्धापूर्ण अभिव्यक्ति के मध्य भेंट किया गया। आप चारों को पुष्पमालाओं से प्रतिनिधियों ने लाद दिया।

सम्मान के अन्तर्गत प्रत्येक को 21000/- इक्कीस सहस्र रुपये की राशि, शॉल, मोतियों की माला तथा चित्तौड़गढ़ (राज.) के विजय स्तम्भ की प्रतिकृति भेंट की गई। विद्वानों ने अपने उद्गारों में इसे देव दयानन्द की दृष्टि का सम्मान मानते हुए आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर पतंजलि योग पीठ से पधारे आयुर्वेदाचार्य श्री बालकृष्ण जी ने चारों विद्वानों को स्मृतिचिन्ह भेंट किये। आपने कहा पतंजलि के मूल में ऋषि दयानन्द की भावना काम कर रही है। हम वेद व दयानन्द के भावों का प्रसार अपने तरीके से कर रहे हैं। आर्य समाज एक मात्र ऐसा आध्यात्मिक संगठन है जो राष्ट्रवाद की बात करता है।

- प्रभाकरदेव आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

Vegetarianism in Vedas

By Inder Dev Khosla Advocate

Definition

Vegetarianism is the theory and practice of living solely on vegetable foods, including milk, to the exclusion of all sorts ot meat. Anything derived from, consisting of plants or plant material is known as Vegetable. The word vegetable is derived from the latin word Vegetabilis which means enliving or to enliven viz to give live, vituality, energy etc. thus vegetarianism signifies that practice by adopting which one is activated or becomes vigorous. Hence it is clear that consumption of vegetables is an essential thing and source of life and in view of that nature has produced it in abundance never to be exhausted.

Reasons for Vegetable diet

Vedas lay great stress on vegetable diet for human consumption since it contains all the important constituents for upkeep of health & body building. This fact is fully supported by modern dieticians and scientists. They advocate that vegetable diet contains lesser fatty elements and certain fibers which are useful in elimination of matter struck up in the intestines. In fact most of the vegetables have medicinal values. Plant is called ¼r#½ Taru in Sanskrit language which means that which helps in overpowering or curing diseases (तरन्ति आपद इति तरुः) Amar Koshal. Vegetable Kingdom is also called dravya. (द्रव्याणि पुनरोषधयः) it has medicial value. The fact is repeated in the following statement also (वनस्पतयो वृक्षवीरन्ध औषधयइति) Even those who take meat are advised by doctors to consume in abundance Salad, Vegetable Soups and fruits etc. to remove the lacuna which exists in diet of meat.

Relations of body and gross elements

This universe is constituted to main five gross elements i.e. (प्रापः) water, (तेज) heat, (वायु) air, (आकाश) cosmos and (पृथिवी) earth. So also all the bodies of living beings are constituted of these elements. Thus there is a relation in between the human body and the products of earth and other elements. Vegetables are also constituted of these elements.

भवन्तो हि शरीरे भावविशषतापन्तो लोके।
यावन्तो लोके तावन्तो शरीरे बुधा एवमेव द्रष्टुम् इच्छन्ति।। (Charak)

Whatever there is in the world, the same elements are found in vegetables. Hence by taking vegetable diet human body gets strength in these five elements of which it consists of. There are different kinds of plants and vegetables and each has special properties of their own. According to our vedic science there are three predominant ¼nks"k½ defects (कफ) Kaf, ¼okr½ wind and (पित्त) excess of heat in living bodies and these doshas (दोषा) can be cured or. put in a balanced state through administraton of that particular vegetable or its products which is useful in each individual case. We have already stated above that the vegetables have medicinal values of their own. One of the study of vegetable kingdom is called Taxonomy, chich is itself a complete independent sabject. It is that branch of biology which deals with the classification of organisms into groups based on similarities of structure origin and their properties etc. Space does not permit us to deal with it in this article in detail.

What to eat

Vedas give hints here and there regarding the fact as to what to eat for the maintenance and up keep of our bodies.

ब्रीहिमत्तं यवत्तमपो माषमधो तिलम्।
एष वा भागो निहितो रत्न धेयाय दन्तौमा।।
हिसिष्ट पितरं मातरं (Ath 6 140.2)

Let both the sets of teeth eat rice, let them eat barley, let them eat beans and sesame, the share allotted to be their portion and let not them harm mother & father.

Here it is noteworthy to understand that each should be satisfied & contented which his/her own share of meal and not to usurp the share of others more specifically of parents—

सं सिंचामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्

संसिका अस्माकं वीरा ध्रवा गावो मयि गोपतौ (Ath. 2.26.4.)

I pour together the milk of cow with the ghee which blends stength and platability. Thus our children be full of strength & vigour & let there be herd of cows to yield milk.

पुष्टि पशुना परि जग्रमाह चतुष्पदा द्विपदां यच्चधन्यम्
पयः पशुना परिजागगाह चतष्पदो द्विपदां चच्चा धान्यम् (Ath 19.31.5)

May the creater, the supreme Being vouchsafe us the milk of Cows, Sheep, other animals yielding milk so also other useful animals & the juice of herebacious plants. We may obtain in abundence weath of quadrupeds, bipeds and whatever is within the range of conrns.

i;ks /kksuquk jleks"k/khuk to;oZrk do;ks; bUo/k
'kX;k HkoUrq e#rks u% j;ksukflLr uks epURogl% (Ath 4.27.31)

Here maruti means all those who are capable of running and are souce of yeilding milk. May there be sap in herbs and speed in horses. May these powerful ones (maruti) be auspacious for us. May these be capable of relieving us from pain, grief of from the troubles.

Protection of animals

या पौरुषैयेण क्रविषा समइक्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो प्रधन्याया मरति क्षी रमग्ने तेषा शीर्षाणि हसापि वृक्श्व (Rig. 10.87.16)

He who eats meat or who consumes the meat of horse or other animals or deprives other of the milk of cows etc. by killing them—such a brute should be beheaded.

य आमं मसिमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रवि।
गर्भान् खदयन्ति केशवास्तानितो नाशवामसि।। (Ath. 8.6.23.)

Whosoever takes raw or prepared meat or takes egg should not be allowed to do so and should be taken to task if he continues this habit.

प्रियः पशना भ्यासम् (Ath. 17.4) One Should endear himself to animals

पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति (Ath. 19.48.5) Protect the animals.

u ekle'uh;kr (Taytriya 1.1.9 (7.8) One should not eat meat.

गामा हिंसी अजा मा हिंसी अप्रवि मा हिंसीरिम् (Yaju 13.43)
मा हिंसी द्विपदि पशुम् मा हिंसो रकेशफ (Yaju. 13.4)
पशु मा हिंस्पात् सर्वा भृतानि (Yaju 13. 48)

In all the above three mantras, it is clearly stated that animals or birds whether bipeds or quadruped should never be killed. Nothing can be more clear than this to prohibit killing of animals and consequently of taking their meat either raw or cooked. Anyone who interprets any vedic mantra or vedic literature justifying taking of meat is deliberately misinterpreting the same to suit his/her purpose. In view of these mantras there is no scope of doubt about not to kill an animal etc.

प्राणीताश्वान् हितं जयाथ स्वस्तिवाहं रथमित्कृधुध्वम्।
द्रोणारावमतरमचक्रम सत्रकोश सिंचता नृपणाम् (Rig. 10.101.7)

In the above mantra it is clearly stated that one should take corns for meals which are useful in giving strength to the body.

पशुन् ये सर्वान रक्षन्ति ते न आत्मसु तेः पशुषु जाग्रति (Ath. 19.48.5)

Those who keep awake in the night for vigilence purposes their main object is to protect the lives of men and animals.

Principle of non-violence

One of the cardinal principles of Vedas and the vedic literature is to avoid violence in any form.

अहिंसा परमोधर्मा, महंक्रत जातिदेश कालस्मयानीच्छन्ताः।
सर्व भौमा महावतंम (Yog darshan 2.31)

Non-violence is the greatest virtue. In the light of that how it is possibly justified that Vedas allow meat eating.

We end this subject with the vedic philosophy contained in Isho Upnishda & yajur Veda wherein it is stated that one should consider all living beings like oneself (आत्मसमान)

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यत्मैवा द्विजानतः तत्र को मोहः कः शोक (Yaju. 40.7)

One who considers all living being like onself, there should be no sorrow. Since nobody would like to hurt himself what to say of killing how would he like to harm the one whom he considers like himself.

In view of all the above facts there is no justificaton to take meat. The only diet for human being is to take natural vegetables diet.

पर्व की पवित्रता बनी रहे

– जवाहरलाल कौल

दीपमाला का शुभ पर्व फिर आ रहा है। यह उत्साह और उल्लास का त्यौहार है। हम चाहे इसे राम से जोड़ें या लक्ष्मी से इस का उद्देश्य हमारे जीवन में खुशियाँ लाना ही है। इसलिए कोई भी ऐसा काम इस पर्व की भावना के अनुकूल नहीं हो सकता जिस से दूसरों के लिए संकट पैदा हो जाए। क्या हम ऐसी दीवाली की कल्पना कर सकते हैं जिस में मां–बाप अपने छोटे बच्चों को दूर रखने का प्रयास करें, बीमार और बूढ़े लोग इस के नाम से ही सहम जाएं? हम समय पर नहीं चेते तो ऐसा ही समय आने वाला है जब दीवाली शुभ संदेश देने वाली नहीं रहेगी– इस से लोग खुश नहीं होंगे, डर जाएंगे।

मैं आप के सामने जो तथ्य रखना चाहता हूँ उनके बारे में आप पहले से ही जानते होंगे। मैं तो केवल याद दिलाने का प्रयास कर रहा हूँ।

१. हमारे देश में कम से कम बीस प्रतिशत बच्चे दमा और सांस के अन्य विकारों से पीड़ित हैं। इन में से बहुतों के विकार गम्भीर बीमारियों का रूप धारण कर चुके हैं। इन बीमारों में से पचास प्रतिशत से भी अधिक दिल्ली जैसे नगरों में ही रहते हैं।

२. सांस के रोगों का अनुपात बूढ़ों में इस से भी अधिक है। चिकित्सा और जीवन यापन की बेहतर सुविधाओं के बावजूद नगरों में रहने वाले लोगों में ये रोग ग्रामीण लोगों की तुलना में अधिक होते हैं।

३. दिल्ली में आग लगने और आग से जलने की घटनाओं में दीवाली के दिनों में खास वृद्धि होती है। सामान्य दुर्घटना में जलने की तुलना में पटाखों से जलना अधिक खतरनाक होता है क्योंकि इन में बारूद और दूसरे रासायनिक पदार्थ होते हैं।

इनका कारण तो साफ है।

हमारे नगरों–खासकर दिल्ली के वायु में भारी मात्रा में प्रदूषण है। कभी–कभी तो दिल्ली सब से अधिक प्रदूषित नगरों के शिखर पर बैठ जाती है। शायद ही कोई मौसम हो जब दिल्ली का वायुमण्डल स्वास्थ्य के मापदण्डों के अनुसा एकदम सही माना जाता हो। लेकिन दीवाली के दिनों में यह लगभग 'गैस चैम्बर' का रूप लेती है।

थोड़ा ध्यान दें कि इस हवा में होता क्या है।

धुएँ से पैदा होने वाले कार्बन–डाई–ओक्साइड के बारे में सब जानते हैं, लेकिन इसी कार्बन के मोनो–ओक्साइड के बारे में हम कितना जानते हैं? यह गैस खामोश हत्यारिन है। जो मारने से पहले न तो आवाज करती है और न महसूस होने देती है कि मौत कितनी निकट है। एक बार वार करने पर व्यक्ति में चाहकर भी कुछ करने की हिम्मत नहीं रहती। कुछ दिन पहले दिल्ली में ही एक पूरा परिवार मौत की नींद सो गया क्योंकि बरसात से बचने के लिए वे अपनी ही कार में देर तक बैठे रहे। इंजन से निकलने वाला कार्बन–मोनो–ओक्साइड उन्हें लील गया। यह अकेली घटना नहीं है– ऐसी दुर्घटनाएँ होती ही रहती हैं।

नाइट्रोजन और सल्फर के ओक्साइड, हाइड्रो कार्बन के विभिन्न यौगिक भी प्रदूषित वायु के अंग होते हैं। लेकिन एक खतरनाक गैस ओजोन भी धुएँ से भरी धुंध यानी स्मोग को घातक बनाती है। स्मोग धुएँ और धुंध के मिश्रण का नाम है जो भारी होने के कारण ऊपर से उतर कर धरती के निकट आकाश में लटका रहता है। इसमें पानी और धुएँ के अतिरिक्त विभिन्न गैसें और धूल के कण भी होते हैं। इस शब्द का पहली बार उपयोग १६०५ में यूरोप में किया गया जब कारखानों के धुएँ के कारण धुएँ के बादल नगरों के आकाश को ढ़क लेने लगे थे। लेकिन अब यह विषैलेस बादल हमारे नगरों में आम दृश्य बन गए हैं। दिल्ली स्मोग के प्रकोप वाले दुनिया के तीन प्रमुख नगरों में एक है। इस तरह के बादल इसलिए अधिक खतरनाक होते हैं कि ये भूमि के बहुत पास होते हैं।

चिंता की बात यह है कि ये सारे तत्व उस धुएँ में होते हैं जो दीवाली के दिनों पटाखों के कारण पैदा होता है। साधारण स्मोग की तुलना में यह इसलिए अधिक घातक है कि यह धरती के निकट ही नहीं होता हमें चारों ओर से घेरे रहता है। हम उसी को पीते हैं।

दीवाली हम मनाएँ और खूब उल्लास के साथ मनाएँ। पटाखे और फुल्झड़िया भी चलाएँ, दिए भी जलाएँ। आखिर यह हमारा प्रकाश पर्व है। लेकिन मर्यादा का भी ध्यान रखें। अगर हम गाड़ियों पर प्रदूषण के मानक लागू करते हैं, कारखानों को प्रदूषण रहित बनाने का प्रयास करते हैं तो अपने सामाजिक व्यवहार पर भी कुछ अंकुश लगाएँ। हमारे शास्त्रों की भी यही सलाह है कि– अति का सर्वत्र त्याग करना चाहिए।

१. वही पटाखे जलाएँ जिन से कम धुआँ छूटता है।

२. पटाखे जलाने की सीमा बांधे।

३. देर रात तक पटाखे विशेषकर तेज आवाज करने वाले पटाखे न जलाएँ।

४. पटाखे चलाने के लिए एक या दो स्थान ही तय करें। सब सड़कों को गंदा न करें।

आशा करता हूँ कि मेरे इस अनुरोध पर आप गम्भीरता से विचार करेंगे।

दिल्ली-३५

हे मूलशंकर! हे दयानन्द।

- विश्वबन्धु आर्य

हे मूल शंकर, हे दयानन्द। तुमको है शत्-शत् बार नमन।
हे आर्य जाति के नर पुंगव। हे आर्य सभ्यता के पुरोधा।
हे आर्य संस्कृति के संरक्षक। तुम सा न हुआ कोई योद्धा।। हे ...
तुम पुरुषोत्तम सम पुरुषोत्तम। तुम कृष्ण चन्द्र से नीतिवान।।
तुम हनुमान से बलशाली। तुम भी थे नैष्ठिक ब्रह्मचारी।।
पुरुषोत्तम ने तारी एक नारी। तुमने सारी नारी जाति तारी। हे ...
तुमने भी उठाया गोवर्द्धन। तुमने भी किया गोसम्वर्द्धन।।
तुमने भी चलाया धर्म चक्र। पाखण्ड खण्डिनी फहराकर।। हे...
तुम में थी करुणा ईसा सी। तुम क्षमाशील तथागत से।।
तुम गाँधी अरविन्द के गुरुदेव। तुम गुरुदेव के गुरुदेव।।
तुम देवों के देव महादेव। तुमने भी पिया कई बार गरला।। हे...
हे प्रथम स्वतंत्रता के उद्घोषक। हे आर्य राष्ट्र के परिपोषक।।
हे क्रांतिदर्शी सेना नायक। हे वेद ऋचाओं के गायक।।
तुम युगदृष्टा तुम युग सृष्टा। हे मूल शंकर हे दयानन्द।। हे....
तुम भी भगवन बन सकते थे। तुम भी पूजे जा सकते थे।।
तुम मण्डलेश्वर भी हो सकते थे। तुम परम पूज्य भी हो सकते थे।। हे.
पर, तुमने तो हे ऋषिवर। घर फूंक तमाशा देखा था।।
माता का रोदन देखा था। और विधवा का क्रन्दन देखा था।।
शासन का देखा दमन चक्र। जो कर गया तब हृदय व्यग्र।। हे....
तुम यह सब कैसे सह सकते थे। तुम चुप कैसे रह सकते थे।।
तुमने फिर फूंका क्रान्ति शंख। करने विधर्मियों का विध्वंस।। हे..
तमने ही लताड़ा पण्डों को। तुमने ही जगाया सोतों को।। हे...
हे एक ईश्वर के आराधक। हे वेद ज्ञान के उद्धारक।।
हे परम तपस्वी योगीराज। हे महाराजों के महाराज।
तुम भूत, भविष्य और वर्तमान। हे त्रिकालदर्शी संन्यासी।।
तुम सा न हुआ कोई महान। हे मूल शंकर, हे दयानन्द।।

आर्य समाज की गतिविधियाँ

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत विद्यालय गंगीरी, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) का 58वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल की स्थापना परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी योगानन्द जी सरस्वती ने वर्ष 1953 में तटनीम नदी के किनारे की थी। गुरुकुल गंगीरी कस्बे से 2 किमी. पूर्व में स्थित है।

गुरुकुल का 58वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 24, 25 व 26 अक्टूबर, 2015 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के व्यवस्थापक स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि योग केवल शारीरिक आसनों तक ही सीमित नहीं है। योग का वास्तविक अर्थ मानव शरीर में स्थित जीवात्मा का परमात्मा से साक्षात्कार होना है और यह योग के आठ अंगों (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि) को व्यवहार में लाने से ही सम्भव है। जो व्यक्ति यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) का पालन नहीं करता उसे शारीरिक आसानों से कोई लाभ नहीं हो सकता। स्वामी जी ने दीर्घ ध्वनि में प्रणव (ओ३म्) के उच्चारण के लाभ भी बताये और आहार शुद्धि पर विशेष बल दिया। शुद्ध आहार से ही निरोगी शरीर सम्भव है। कहा भी जाता है कि - ''जैसा खाओ अन्न, वैसा बने मन''। मांसाहार से मदिरा और नशीले पदार्थ खाने की आदत पड़ती है और चेहरा मांसाहारी पशु जैसा बदल जाता है।

स्वामी विश्वानन्द, अधिष्ठाता गुरुकुल दखौला (मथुरा) तथा स्वामी चेतन देव, भैया चामड़ (अलीगढ़) ने अपने प्रवचनों में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की आवश्यकता और विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इनके अतिरिक्त आचार्य राम प्रकाश वर्णी (एटा) आचार्य जीवनसिंह (साधु आश्रम) अलीगढ़ ने भी वैदिक विचारधारा पर अपने विचार व्यक्त किये। श्री लक्ष्मी नारायण, भजनोपदेशक कलुआ (अलीगढ़) तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने सम्भाषण और भजनों के द्वारा उपस्थित जनता को वशीभूत कर दिया।

उत्सव के सत्रों का संचालन स्वामी उद्गीथानन्द, अधिष्ठाता और श्री विद्याधर आर्य शास्त्री द्वारा उत्कृष्ट रूप में किया गया। आचार्य तेज प्रकाश आर्य, प्रधान आचार्य मित्रसेन आर्य, उपप्रधान श्री पीताम्बर दत्त शास्त्री मंत्री/प्रबन्धक श्री वैद्य राजेन्द्र कुमार शर्मा, उपप्रबन्धक, श्री के. सी. शर्मा, संयोजक श्री गंगादयाल आर्य, आचार्य पं. लाखन सिंह आर्य, स्वागत मंत्री श्री कुलदीप आर्य, स्वागताध्यक्ष और स्वामी शान्तानन्द सरस्वती (हाथरस) का विशेष सहयोग यज्ञ, भोजन, निवास आदि में सराहनीय रहा।

- स्वामी उद्गीथानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता,
मो.:-9719325353

रात्रि 12 बजे चन्द्रमा की शीतल आरोग्यकारी चांदनी से आप्लावित औषधियुक्त खीर द्वारा 255 अस्थमा रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की गई

जयपुर : 28 अक्टूबर, 2015 को रात्रि 10 बजे स्व. सेठ लक्ष्मी नारायण स्मृति संस्थान द्वारा हिण्डौन हाउस में 255 रोगियों को निःशुल्क औषधियुक्त खीर खिलाई गई। संस्थान के कोषाध्यक्ष पवन आर्य गोयल के अनुसार शिविर में दूर-दराज से आये अनेक वृद्ध महिला बच्चों ने इसका लाभ उठाया।

संस्थान संरक्षक यशपाल 'यश' ने खान-पान में आवश्यक परहेजों की जानकारी देकर उत्तम जीवन शैली के लिए श्वांस-प्रश्वासों पर आधारित ध्यान प्राणायाम अभ्यास करायें। बच्चों को लगभग शत-प्रतिशत लाभ पर 'यश' ने संतोष जताया। शिविर में नितिन व राजेश जोगी सहित कई कार्यकर्ताओं ने सहयोग किया।

आगामी शिविर 25 नवम्बर, 2015 बुधवार को आयोजित होगा। पंजीकरण व जानकारी 9414360248 पर उपलब्ध है।

सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचारोत्सव

आर्य समाज पुरानी आबादी व आर्य स्त्री समाज के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग श्री गंगानगर के प्रांगण में 26 से 29 नवम्बर, 2015 तक सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचारोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विशेष सामवेद पारायण यज्ञ वरेण्या विदुषी आचार्या धारणा याज्ञिकी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा इसके अतिरिक्त श्री सत्येन्द्र आर्य मेरठ के उपदेश तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। श्री घनश्याम प्रेमी मुजफ्फरनगर के भजनोपदेशों का रसास्वादन करने का भी अवसर है। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन

जयपुर : गोविन्दपुरी रामनगर सोडाला के धर्मप्रेमियों द्वारा 16 से 18 अक्टूबर, 2015 तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन कराया गया। प्रख्यात वैदिक विद्वान् डॉ. रामपाल विद्या भास्कर के ब्रह्मत्व में वेदपाठ डॉ. कृष्णपाल सिंह, पं. भगवान सहाय विद्या वाचस्पति एवं श्रीमती श्रुति शास्त्री द्वारा हुआ। कुशल मंच संयोजन डॉ. संदीपन आर्य का रहा। इस दौरान सर्वश्री जवाहर वधवा, श्रुति शास्त्री, मेहरा परिवार के मधुर एवं प्रभावोत्पादक भजन भी हुए।

पूर्णाहुति पश्चात् यज्ञ संचालन समिति के संयोजक रघुनन्दन बंसल ने सभी आगन्तुकों का आभार प्रकट करते हुए विद्वत्मण्डल का सत्कार किया। कार्यक्रम की सफलता का श्रेय कर्मठ उत्साही जनों, राजेन्द्र आर्य, चन्द्रभान सिंह चौहान एवं जुगल किशोर शर्मा को है।

प्रेरणा स्रोत डॉ. कृष्णपाल सिंह के प्रयासों का अनुकूल संदेश स्थानीय जनता में गया।

- ईश्वर दयाल माथुर

आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली का 61वाँ वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेदीय महायज्ञ

आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली का 61वां वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेदीय महायज्ञ 18 से 22 नवम्बर, 2015 तक हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य श्यामदेव जी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेदीय महायज्ञ का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक एवं गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं, अधिक से अधिक संख्या में पधार कर आयोजन को सफल बनायें।

- जगदीश आर्य, प्रधान

आर्य समाज नींदड़ (जयपुर) ने 48वाँ वार्षिकोत्सव मनाया

जयपुर : आर्य समाज नींदड़ का 48वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 23 से 25 अक्टूबर, 2015 को मनाया गया। प्रतिदिन दो सत्रों में यज्ञ, भजन एवं प्रवचन आर्य जगत के प्रख्यात विद्वानों एवं भजनोपदेशक द्वारा हुए। भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल (देहरादून) विशेष आमंत्रित थे जिनके भजनों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध रखा। श्रीमती श्रुति शास्त्री एवं अन्य स्थानीय गायकों के भजन भी सराहे गये।

डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के प्रवचन सग्राह्य शैली में ईश्वर प्रणिधान पर केन्द्रित रहे, वहीं डॉ. कृष्णपाल सिंह ने वेदानुकूल आचरण से ही समाज व राष्ट्रोत्थान पर बल दिया।

समापन सत्र में मंचस्थ प्रतिभाओं में पं. बासुदेव शास्त्री, देवव्रत शास्त्री, निदेशक डी.ए. वी., एम. एल. गोयल एवं प्राचार्य ए. के. शर्मा थे।

आर्य समाज के प्रधान पं. भगवान सहाय विद्यावाचस्पति ने विशेष उल्लेख में बताया कि 12 से 14 वर्ष के बालक-बालिकाएँ सभी सत्रों में उपस्थित रहे एवं भजन प्रस्तुत करते रहे। उपप्रधान अरविन्द शर्मा ने उपस्थितों का आभार व्यक्त किया और मंत्री प्रमोद शर्मा ने विद्वानों को सत्कृत किया।

सभी सत्रों में कुशलता से संयोजक की भूमिका डॉ. संदीपन आर्य ने निभाई। ऋषि लंगर के साथ समागम विसर्जित हुआ।

- ईश्वर दयाल माथुर

भजन संध्या श्री राम के नाम

जयपुर : नगर की मानसरोवर कालोनी के चित्रकूट पार्क 56 सेक्टर में विजयदशमी 22 अक्टूबर को भजन संध्या का आयोजन हुआ।

चित्रकूट पार्क विकास समिति एवं दिव्य वैदिक सत्संग मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में देहरादून के प्रख्यात भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल को आमंत्रित किया गया। श्री सत्यपाल सरल के मधुर भजन श्री राम की मर्यादा, दिव्य चरित्र एवं राष्ट्र प्रेम पर केन्द्रित रहे जिससे आगन्तुक श्रोता मंत्रमुग्ध रहे। भजन संध्या में नगर के सभी आर्यजनों एवं समाजों का प्रतिनिधित्व रहा और स्थानीय पौराणिकों में भी अनुकूल सन्देश गया।

चित्रकूट पार्क समिति के संरक्षक विजय गुप्ता एवं दिव्य वैदिक सत्संग के अधिष्ठाता सुनील अरोड़ा ने सरल जी का सत्कार एवं श्रोताओं का आभार व्यक्त किया।

- ईश्वर दयाल माथुर

स्वामी दयानन्द निःसंदेह एक ऋषि थे उन्होंने अपने में महान भूत और भविष्य को मिला लिया। यह मरकर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव मानव को कारागार से मुक्त कराने और जाति बंधन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है '' आर्यावर्त उठ जाग, समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर आगे बढ़। *- पाल रिचर्ड*

योगीराज महर्षि दयानन्द

– स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती को समझने में लोगों ने भारी भूल की है। बहुत से व्यक्तियों को यह भ्रम है कि ऋषि दयानन्द केवल एक समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज में फैली रूढ़ियों और पाखण्डों का खण्डन किया और बस। परन्तु वस्तुत: देखा जाए तो समाज सुधार तो स्वामी जी के कार्य का एक अंगमात्र था। उनका जीवन तो सर्वतोमुखी था। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक, शैक्षणिक और नैतिक सभी क्षेत्रों में काम किया। वे आप्त पुरुष थे, तत्त्वदर्शी एवं परोक्षदर्शी थे। वे आध्यात्मिक विद्या के धनी और उच्चकोटि के योगी थे। अपने लगभग 20 वर्ष के अल्प प्रचार काल में उन्होंने जो महान् कार्य किया वह उन्हीं के शब्दों में बिना योग बल के असंभव था। महर्षि का आरंभिक जीवन योगमय जीवन था।

चौदह वर्ष की अवस्था में शिवरात्रि के दिन शिवलिंग पर चढ़े नैवेद्य को खाते हुए चूहे को देखकर ऋषिवर के हृदय में सच्चे शिव को प्राप्त करने की लालसा जागी और अपनी बहन तथा प्रिय चाचा की मृत्यु देखकर मृत्युंजय बनने की इच्छा बलवती हुई। शिव प्राप्ति और मृत्युंजय बनने का मार्ग उन्हें योगाभ्यास से बतलाया गया। अपनी साध को सिद्ध करने के लिए 21 वर्ष की अवस्था में वे अपने धन-धान्य से भरपूर परिवार को, माता-पिता के प्यार और दुलार को तथा बन्धु-बान्धवों और मित्रों के स्नेह को छोड़कर घर से निकल पड़े और चल दिये योगियों की खोज में। जहाँ कहीं किसी सिद्ध अथवा योगी के सम्बन्ध में सुनते, वहीं जा पहुंचते। उन्होंने अनेक कुटियों, आश्रमों और मठों का चक्कर लगाया, अनेक महात्माओं का सत्संग किया, परन्तु तृप्ति नहीं हुई। फिर भी वे निराश और हताश नहीं हुए। होते भी क्यों।

गिरे सौ बार भी बिजली अगर किशते तमन्ना पर।
जो हिम्मतदार हैं मायूस कब होते हैं हासिल से॥

उन्होंने अपना प्रयत्न जारी रखा। अंतत: खोजते-खोजते चाणोद कर्नाली में स्वामी जी महाराज को श्री ज्वालानन्द पुरी और श्री शिवानन्द गिरी के. दर्शन हुए। उन्होंने स्वामी जी को आत्मज्ञान पिपासु जानकर, अपने साथ अभ्यास कराया। कुछ समय पश्चात वे दोनों योगी अहमदाबाद चले गए और स्वामी जी को आदेश दे गए कि एक मास पश्चात् दुग्धेश्वर के मंदिर में हम तुम्हें योग विद्या के रहस्य और चरम प्रणाली के विषय में शिक्षा देंगे। योग जिज्ञासु दयानन्द एक मास पश्चात् दुग्धेश्वर के मन्दिर में जा पहुंचे। उन्होंने भी स्वामी जी को सुपात्र जानकर उन्हें योग के भेद और रहस्य बताकर योग के अमूल्य रत्नों से मालामाल कर दिया। इस विषय में स्वामी जी अपने स्वलिखित जीवन चरित्र में लिखते हैं –

"वहाँ उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और अपने कथनानुसार मुझे निहाल कर दिया। उन्हीं महात्माओं के प्रभाव से मुझे क्रिया सहित सम्पूर्ण योग विद्या भली-भांति विदित हो गई, इसलिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। वास्तव में उन्होंने मुझ पर एक महान उपकार किया।"

महर्षि यहीं तक सीमित नहीं रहे। जब उन्हें पता लगा कि जो कुछ शिक्षा उन्होंने प्राप्त की है उससे भी उच्चतर योग विद्या को जानने वाले योगी विद्यमान हैं तो उन्होंने और भी अनेक स्थानों पर घूम-घूम कर योग विद्या के रहस्य हस्तगत किये। परन्तु पूर्ण योगी बनकर भी उन्होंने अपने को छिपाए रखा क्योंकि सिद्धियों के चक्कर में पड़कर वे अपनी शक्ति को नष्ट करना नहीं चाहते थे। एक बार 'पायोनियर' के सम्पादक सिनट ने स्वामी जी से योग के चमत्कार दिखाने के लिए कहा था, उसी का वर्णन करते हुए स्वामी जी ने कर्नल अल्काट और मैडम ब्लैट वेस्की को एक पत्र लिखा था –

'जो मैंने सिनट साहब से कहा था वह ठीक है, क्योंकि मैं इन तमाशे की बातों को देखना दिखलाना उचित नहीं समझता, चाहे वे हाथ की चालाकी से हों, चाहें योग की रीति से हों। क्योंकि योग के करे-कराए बिना किसी को भी योग का महत्त्व वा इसमें सत्य प्रेम कभी नहीं हो सकता, वरन संदेह और आश्चर्य में पड़कर उसी तमाशे दिखलाने वाले की परीक्षा और सब सुधार की बातों को छोड़ तमाशे देखने को सब दिन चाहते हैं और उसके साधन करना स्वीकार नहीं करते। जैसे सिनट साहब को मैंने न दिखलाया और न दिखलाना चाहता हूँ, चाहें वे राजी रहे चाहे नाराज हों क्योंकि जो मैं इसमें प्रवृत्त होऊँ तो सब मूर्ख और पण्डित मुझसे यही कहेंगे कि हम को भी कुछ योग के आश्चर्य काम दिखलाइये, जैसा उसको आपने दिखलाया। ऐसी संसार की तमाशे की लीला मेरे साथ लग जाती जैसी मैडम एच. पी. ब्लैटवेस्की के पीछे लगी है। अब जो इनकी विद्या धर्मात्मा की बातें हैं कि जिससे मनुष्यों की आत्मा पवित्र हो, आनन्द को प्राप्त हो सकते हैं उनका पूछना और ग्रहण करने से दूर रहते हैं। किन्तु जो कोई आता है मैडम साहेब आप हमको भी तमाशा दिखलाइये। इत्यादि कारणों से इन बातों में प्रवृत्त नहीं करता न कराता हूँ। किन्तु कोई चाहे तो योग-रीति सिखला सकता हूँ कि जिससे वह स्वयं योगाभ्यास कर सिद्धियों को देख लेवे।" (महर्षि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन)

योगदर्शन का तीसरा पाद विभूषित पाद है। इस पाद में योग के ऐश्वर्यों योग के होने वाली सिद्धियों का वर्णन है। बहुत से लोग समझते हैं कि यह सब गप्प है, परन्तु महर्षि दयानन्द इन सिद्धियों को गप्प नहीं समझते, यह उनके उपर्युक्त कथन से स्पष्ट सिद्ध है। इस विषय में स्वामी जी के जीवन की एक अन्य घटना भी अवलोकनीय है –

एक बार एक व्यक्ति ने स्वामी जी से पूछा, "भगवान्! पातंजल शास्त्र का विभूति पाद क्या सच्चा है?"

ऋषि ने उत्तर दिया – "आप यों ही संदेह करते हैं। योगशास्त्र तो अक्षरश: सत्य है। वह कोई पुराण की सी कल्पना नहीं है, किन्तु क्रियात्मक और अनुभवसिद्ध शास्त्र है। दूसरी विद्याओं में उत्तीर्ण होने के लिए आप लोग कई वर्ष व्यय करते हैं। इसके लिए यदि आप तीस मास तक मेरे पास निवास करें और मेरे अनुकूल योग-क्रियाएं साधें, तो आप इस शास्त्र की सिद्धियों का साक्षात् स्वयं कर लेंगे।"

स्वामी जी को अनेक सिद्धियाँ प्राप्त थीं। स्वामी जी अपनी योग शक्ति के द्वारा दूसरों के मनोगत भावों को जान लिया करते थे।

एक बार एक सज्जन ने स्वामी जी से प्रार्थना की, "महाराज!

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

अभ्यास में मन लगाने का भरसक प्रयत्न कर रहा हूँ परन्तु मन टिकता ही नहीं, संकल्प-विकल्प ही नहीं होते।"

स्वामी जी ने व्यंग्य करते हुए कहा, "मन नहीं टिकता तो भंग भवानी का एक लोटा और चढ़ा लिया करो।"

यह उत्तर सुन उसे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि स्वामी जी को उसके भंग पीने की बात का पता नहीं था।

उदयपुर वास के दिनों में ऋषिवर बहुत प्रात: नौलखा उद्यान वाले सरोवर के किनारे-किनारे गोवर्द्धन पर्वत की ओर जाया करते थे। एक दिन उद्यान से बहुत अन्तर पर सहजानन्द जी ने देखा कि महाराज जल पर पद्मासन लगाये, योगमुद्रा में कमल दल की भांति विराजमान थे।

आगरा निवास के समय स्वामी जी दोनों समय योगारूढ़ हुआ करते थे। किसी-किसी दिन पहरों अचलभाव से ध्यानावस्थित रहते। लोगों ने उनको 18-18 घंटे की समाधि लगाते देखा था।

जब महाराज प्रयाग पधारे तो भगवानदास नामक एक व्यक्ति को महाराज की योगक्रिया देखने की बड़ी प्रबल इच्छा थी। एक दिन उसने छिपकर देखा कि महाराज भूमि से छ: इंच ऊपर शून्य में स्थित थे।

एक अन्य पत्र में महाराज ने मैडक ब्लैटवेस्की को लिखा था –

"आत्मा मनुष्य शरीर में अद्भुत कार्य कर सकती है। संसार में (ईश्वर से लेकर पृथिवी पर्यन्त) सभी पदार्थों के स्वरूप और गुणों को जानकर मनुष्य अत्यंत दूर के पदार्थों का दर्शन, श्रवण आदि की शक्ति प्राप्त कर सकता है, जिसे प्राप्त करने में प्राय: असमर्थ रहता है।" (पत्र और विज्ञापन)

एक नवाब ने महाराज से पूछा, "क्या कोई ऐसी विद्या है जिससे यहाँ बैठा मनुष्य अन्यत्र की बात जान ले?" स्वामी जी ने उत्तर दिया, "योगी लोग इच्छा नहीं करते। सबमें गुप्त ब्रह्म विद्या है, योगी का उसी को जानने का उद्देश्य है। अत: यदि योगी चाहे तो योग विद्या द्वारा गुप्त बातों को जान सकता है।"

ऋषिवर को यह सिद्धि भी प्राप्त थी। उदयपुर की घटना है। एक दिन श्री राणा सज्जनसिंह जी और सहजानन्द जी आदि सज्जन स्वामी जी के पास बैठे थे। स्वामी जी ने राणा जी से कहा, "पंडित सुन्दरलाल जी यहां आ रहे हैं। यदि पहले सूचना दे देते तो उनके लिए यान का उचित प्रबन्ध कर दिया जाता।" राणा जी ने कहा, "भगवन्! यान तो अब भी भेजा जा सकता है। इस पर स्वामी जीने कहा – अब तो बैलगाड़ी में आ रहे हैं। उनका एक बैल शुक्लवर्ण है और दूसरे के तन पर लाल धवल धब्बे हैं। वे कल यहाँ पहुँच जायेंगे।" महाराज का कहना अगले दिन बिल्कुल ठीक सिद्ध हुआ।

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में योग के बहुमूल्य रत्न बिखरे हुए हैं। पाठकों की ज्ञानवृद्धि और लाभार्थ कुछ यहाँ उपस्थित किये जाते हैं।

"जब मनुष्य अपने आत्मा के साथ परमात्मा के योग को प्राप्त होता है तब अणिमा आदि सिद्धि उत्पन्न होती है। उसके पीछे कहीं से न रुकने वाली गति से अभीष्ट स्थानों को जा सकता है अन्यथा नहीं।"

(यजुर्वेद भाष्य 17।67 का भावार्थ)

"जो योगी पुरुष तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान आदि योग के साधनों से योग (धारणा, ध्यान, समाधिरूप, संयम) के बल को प्राप्त हो और अनेक प्राणियों के शरीरों में प्रवेश करके अनेक पदार्थों वा धनों का स्वामी भी हो सकता है उसका हम लोगों को अवश्य सेवन करना चाहिए।"

(यजुर्वेद 17।71 का भावार्थ)

"जो अच्छे कामों को करके योगाभ्यास करने वाले विद्वान् का संग और प्रीति से संवाद करते हैं, वे सबके अधिष्ठान परमात्मा को प्राप्त होकर सिद्ध होते हैं।"

(यजुर्वेद 17।73 का भावार्थ)

प्राणायाम का वर्णन करके उसके लाभों का वर्णन करते हुए ऋषिवर लिखते हैं –

"बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्म रूप हो जाती है कि जो बहुत कठिन और सूक्ष्म विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती है। इससे मनुष्य शरीर में वीर्य वृद्धि को प्राप्त होकर स्थिर बल, पराक्रम, जितेन्द्रियता, सब शास्त्रों को थोड़े ही काल में समझकर उपस्थित कर लेगा।"

(सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास)

उपासना पद्धति पर प्रकाश डालते हुए योगीराज दयानन्द लिखते हैं –

"जब-जब मनुष्य लोग उपासना करना चाहें, तब-तब इच्छा के अनुकूल एकान्त देश में बैठकर, अपने मन को शुद्ध और आत्मा को स्थिर करें। तथा सब इन्द्रियों और मन को सच्चिदानन्द लक्षण वाले अन्तर्यामी अर्थात् सबमें व्यापक और न्यायकारी परमात्मा में नियुक्त करें। फिर उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना को बारम्बार करके अपने आत्मा को भली-भांति उसमें लगा दें।"

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, उपासना विषय)

"जब आसन दृढ़ हो जाता है, तब उपासना करने में कुछ परिश्रम करना नहीं पड़ता है, और न सर्दी-गर्मी अधिक बाधा करती है।"

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, उपासना विषय)

ईश्वर के दर्शन कहाँ होते हैं इस तथ्य का सुन्दर निरूपण भी स्वामी जी के शब्दों में पढ़िये –

"कण्ठ के नीचे, दोनों स्तनों के बीच में, और उदर के ऊपर जो हृदय देश है उसका ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच में जो गर्त है, उसमें कमल के आकार वेश्म अर्थात् अवकाश एक स्थान है, और उसी के बीच में जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा बाहर भीतर एकरस होकर भर रहा है, वह आनन्दस्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है। दूसरा उसके मिलने का कोई स्थान वा मार्ग नहीं है।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, उपासना विषय)

इस प्रकार के सैकड़ों उद्धरण दिए जा सकते हैं परन्तु स्थानाभाव के कारण उन सबका उल्लेख यहाँ नहीं हो सकता।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

अन्धकारमय अवस्था से परमज्योति-प्राप्ति

उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

—ऋ० १/५०/१० ; अथर्व० ७/५/५३

ऋषिः—**प्रस्कण्वः काण्वः**।। देवता—**सूर्यः**।। छन्दः—**निचृदनुष्टुप्**।।

विनय—हमें ऊपर–ऊपर, अधिक–अधिक प्रकाश में उठना है। इस अन्धकारमय अवस्था से निकल परमज्योति तक पहुँचना है। हमें अपनी यह वर्त्तमान अवस्था अन्धकारमय इसलिए प्रतीत नही होती चूँकि हमें उसके अतिरिक्त अभी और किसी प्रकाश का पता ही नहीं हैं। यदि हमें इससे अगला ही प्रकश दीखने लगे तो कम–से–कम इस वर्त्तमान अँधेरी दशा से बाहर निकलने को हमारा जी अवश्य छटपटाने लगे। हाँ, उस अन्तिम ज्योति तक बेशक हम धीरे–धीरे ही पहुँचेंगे। एकदम उस परमज्योति को तो हमारी आँख सह नहीं सकेंगी, अभी उस चकाचौंध करने वाले महाप्रकाश के दृष्टिगोचर हो जाने पर तो शायद हमारी अनभ्यस्त निर्बल दृष्टि अन्धी हो जाए या हम पागल जाएँ, अतः हमें क्रमशः एक के बाद एक उच्चतर प्रकाश को देखते हुए ऊपर जाना होगा। हम इस तामसिक दशा को छोड़ राजसिक अवस्थाओं से गुजरते हुए सत्त्व के प्रकाश में पहुँचेंगे। इस जड़वाद (नास्तिकता) और भोगवाद के अन्धकार से उठ देववाद और यज्ञवाद के विविध प्रकाशों को देखते हुए उस सर्वोच्च प्रकाश में जा पहुँचेंगे जहाँ एकेश्वरवाद और सर्वोदयवाद का अखण्ड राजय है। जड़ता, स्थूलता के पार्थिव अन्धकार से उठकर सूर्य–किरणों से प्रकाशित सूक्ष्मतर विस्तृत अन्तरिक्ष की सैर करते हुए उस सूर्य ही को पा लेंगे जिसकी कि ज्योतिर्मय किरणों से अन्य सब लोक प्रकाश पा रहे हैं। हे प्रभो! हम पर ऐसी कृपा करो कि हम इस अन्धकारमय प्रकृतिग्रस्त अवस्था से उठकर नाना देवों को दिखलानेवाली अपनी आत्मिक ज्योति को विविध प्रकार से देखते हुए अन्त में तुम्हारी उस परमात्म–ज्योति को पा लेवें, जिसमें कि तुम सब देवों के देव और सब ब्रह्माण्ड के प्रेरक महान् सूर्य होकर अपने अनन्त अपार अखण्ड प्रकाश में सदैव जगमगा रहे हो, सदैव देदीप्यमान हो रहे हो।

शब्दार्थ—**वयम्**=हम **तमसः परि**=अन्धकार से ऊपर **उत्**=ऊँचे उठकर **उत्तरं ज्योतिः**=अधिक उच्च, उच्चतर, प्रकाश को **पश्यन्तः**=देखते हुए उस **देवत्रा देवम्**=सब देवों के देव, सब प्रकाशों के प्रकाशक **सूर्य**=सर्वप्रेरक, महासूर्य को **उत्तमं ज्योतिः**=उस सबसे उत्तम, उच्चतम ज्योति को **अगन्म**=प्राप्त करें।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

गाँधी से पूर्व महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के लिए महान कार्य किया। उन्होंने भारतीयों को 'स्वराज्य' का मार्ग बताया। ऋषि एक पूर्ण पुरुष तथा भारत के युग निर्माता थे।

– डॉ. पट्टाभि सीतारमैया

आर्य समाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है, भारत चुनाव हुआ देश है और वेद चुनी हुई पुस्तक है।

– रेगजे मेकडानल्ड

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के शुभ अवसर पर
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

लागत मूल्य 80/– रुपये

100 प्रति लेने पर मात्र 40 रुपये में दिया जायेगा

भारी छूट पर उपलब्ध

10 से अधिक प्रति लेने पर 50 रुपये में दिया जायेगा

23 गुणा 36 के 16वें साईज तथा पेपर वैक जिल्द में आकर्षक टाइटल के साथ बढ़िया कागज पर प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।